मूल्य: 20/-

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

वर्ष-02, अंक:-01 जनवरी, 2025

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

गुजरात में पुलिस ड्यूटी के दौरान सिनेमा हॉल में फिल्म देखकर रेड मारने निकलता था : (स्व.) आचार्य किशोर कुणाल,

पूर्व आईपीएस एवं संस्थापक सचिव, महावीर मंदिर न्यास समिति, पटना

शिक्षा से वंचित शरणार्थी बच्चे

कॉन्फिडेंस नहीं था कि मैं टीवी में आऊं लेकिन मेरे गुरु का मुझपर बहुत भरोसा था : रतन राजपूत, अभिनेत्री

शू लॉन्ड्री की शुरुआत करने के पहले ही घरवाले खिलाफ हो गए थें : शाजिया कैसर

RNI No.: BIHHIN/2023/86004

राधा कृष्णा द्वारिका मंदिर

पश्चिमी बोरिंग कैनाल रोड पटना-800001 (बिहार)

समस्त देशवासियों को
नव वर्ष एवं मकर संक्रांति की
हार्दिक शुभकामनाएँ

रंजन यादव नवीन

सचिव

राधा कृष्णा द्वारिका मंदिर, पश्चिमी बोरिंग कैनाल रोड पटना–800001 (बिहार)

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष–2, अंक: 01 जनवरी, 2025

संपादक : **राकेश कुमार सिंह**
सहायक संपादक : **अमलेंदु कुमार**
प्रबंध संपादक : **प्रीतम कुमार**
सलाहकार संपादक : **मनोज भावुक**
कंप्यूटर ग्राफिक्स : **संजय कुमार**
कानूनी सलाहकार : **अमित कुमार**
प्रचार–प्रसार : **निशांत कुमार 'निराला'**

BIHHIN/2023/86004

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार सिंह द्वारा अन्नपूर्णा ग्राफिक्स, C/O जय दुर्गा प्रेस, बिहाइंड गुलाब पैलेस, आर्य कुमार रोड, पटना, बिहार–800004 से मुद्रित एवं 3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001 से प्रकाशित ।
संपादक : **राकेश कुमार सिंह**

संपादकीय कार्यालय

3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड,
आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. – 7903935006/7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com

रजि. कार्यालय

3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड,
आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. : 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com
वेबसाइट : www.bolozindagi.com

सभी पद अवैतनिक

सभी विवादों का निपटारा पटना की सीमा में आनेवाली सक्षम अदालतों में किया जाएगा।

गुजरात में पुलिस ड्यूटी के दौरान सिनेमा हॉल में फिल्म देखकर रेड मारने निकलता था :

(स्व.) आचार्य किशोर कुणाल, पूर्व आईपीएस एवं संस्थापक सचिव, महावीर मंदिर न्यास समिति, पटना

03

1. कॉन्फिडेंस नहीं था कि मैं टीवी में आऊं लेकिन मेरे गुरु का मुझपर बहुत भरोसा था : रतन राजपूत, अभिनेत्री 6
2. सिगरेट पीने के सीन में मुझे खांसी होने लगती थी : आर्यन वैध, फिल्म अभिनेता 7
3. मैं बिना दहेज के एक आईएएस बेटे की बहू बनी थी 8
4. हर्ष, उमंग एंव सद्भावना का त्यौहार : लोहड़ी 10
5. भारतीय मूल के छह सांसदों ने ली अमेरिकी सदन की शपथ 12
6. भिखारी ठाकुर एक नारा नहीं, एक विचार हैं 13
7. एक अहसास है नेपाल का पोखरा 16
8. युवाओं के लिए कैसा होगा वर्ष 2025 ? 18
9. शिक्षा से वंचित शरणार्थी बच्चे 19
10. शू लॉन्ड्री की शुरुआत करने के पहले ही घरवाले खिलाफ हो गए थें : शाजिया कैसर 21
11. पेपर लीक 22
12. वर्ष 2025 गणितीय दृष्टिकोण से एक अजूबा एवं रोचक वर्ष 23
13. अपने 'सेल्फ' को कैसे बेहतर करें ? 24
14. आदित्य चोपड़ा की यशराज फिल्म्स ने मर्दानी 3 की घोषणा की 25
15. भोजपुरी गायिका देवी के गांधी भजन ''रघुपति राघव'' के गायन पर विवाद 26
16. खुद कोरोना पॉजिटिव रहते हुए कई कोविड पेशेंट्स के काम आईं ये डॉक्टर : डॉ. आकांक्षा अभिषेक, चीफ डेंटल कंसल्टेंट 28
17. लाल मिर्च का अचार 29
18. ''एक देश एक चुनाव'' लागू होने पर कई राज्यों का कार्यकाल घटेगा 30
19. मार्को– भारतीय सिनेमा की सबसे हिंसक फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर सनसनी मचा दी 32

जिंदगी बहुत कुछ सिखाती है

यह जिंदगी हमें बहुत कुछ सिखाती है, हंसाती भी है और हद से ज्यादा रुलाती भी है।

अगर किसी की जिंदगी हमें सोये से जगाती है गिरकर हताश हो जाने के बाद भी हमें झकझोड़ कर उठाती है, हारने के बाद भी जीतने के लिए उकसाती है तो उसे अपनाने या अमल में लाने से क्या परहेज! क्या पता किसी की जिंदगी से प्रेरित होकर हम कल वह नदी बन जाएं जो जाने अनजाने लाखों की प्यास बुझा जाएं..!

किसी ने सच कहा है, जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं। सही तो है दोस्तों अगर चार दिन की जिंदगी को हम गमों के सहारे बिता दें तो ऐसा जीना भी क्या है जीना। यहां बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्होंने जिंदगी के हर मोड़ पर एक नया सबक लिया। जिन्होंने अपनी जिंदगी में हर तरह के काम किए और किसी भी काम को छोटा नहीं समझा। बस, चलते गएं मंजिल की राह पर। कई लोग यहां ऐसे हैं जिनकी जिंदगी की शुरुआत मुस्कुराहटों से हुई लेकिन बाद में उनके जीवन में दुखों के कांटे बिछ गएं। तो क्या उन्होंने मुस्कुराना छोड़ दिया ? नहीं, बल्कि बिना पीछे मुड़े जिंदगी के सफर में कदम बढ़ाते गएं, यह सोचकर कि शायद आगे वह पड़ाव आ जाए जब हंसने के लिए दिल बेकरार हो जाए। हमारी भी यह कोशिश रहेगी कि हम आपको उन शख्सियतों की जिंदगी को करीब से दिखाएं, जिन्होंने जीवन को जिया बिल्कुल ही अलग अंदाज में और यह दिखा दिया कि अगर इरादे मजबूत हों तो जिंदगी खुद ब खुद मेहरबान हो जाती है। बोलो जिंदगी के सभी पाठकों को नववर्ष की मुबारकबाद।

राकेश कुमार सिंह
संपादक

गुजरात में पुलिस ड्यूटी के दौरान सिनेमा हॉल में फिल्म देखकर रेड मारने निकलता था :

(स्व.) आचार्य किशोर कुणाल, पूर्व आईपीएस एवं संस्थापक सचिव, महावीर मंदिर न्यास समिति, पटना

मेरा गांव बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में है लेकिन मेरा जन्म ननिहाल में चंपारण जिले में हुआ। फिर भी ननिहाल में एक एक दो बार ही जा पाया हूं। मेरे पिताजी शुगर फैक्ट्री में थें। पहले तो बिहार में ही चकिया, सुगौली, चंपारण में थें फिर बाद में वह बलरामपुर चले गएं। जो उत्तर प्रदेश में अयोध्या के पास है, यहीं से अटल बिहारी वाजपेई जी बहुत बार एमपी हुए थें।

हम दो भाई दो बहन हुएं। हाई स्कूल तक की पढ़ाई मेरे गांव से हुई। उस समय प्री साइंस का जमाना था तो मैंने एलएस कॉलेज मुजफ्फरपुर से प्री साइंस पास किया। इंजीनियरिंग के लिए बहुत नंबर थे, उस समय इंजीनियरिंग का बहुत क्रेज भी था। घरवाले उसमें भेजना चाहते थें लेकिन तब छात्र जीवन से ही राहुल सांकृत्यायन को पढ़कर मैं मार्क्सवादी सिद्धांत का हो गया था लेकिन किसी पार्टी में नहीं था। मुझे लगा कि मैं इंजीनियरिंग में जाकर क्या करूंगा, उससे अच्छा है कि मैं पटना कॉलेज आ जाऊं। लेक्चरर रहूंगा तो पूरी जिंदगी लिखने पढ़ने में गुजरेगी क्योंकि बचपन से ही मुझे लिखने पढ़ने का खूब शौक रहा है। इसलिए मैंने इंजीनियरिंग छोड़ी, साइंस छोड़ा, मुजफ्फरपुर छोड़ा और पटना कॉलेज में आकर मैंने नाम लिखाया। सेशन तीन–चार महीने पीछे था लेकिन तब यहां जो प्रिंसिपल थे महेंद्र प्रताप साहब जो मुजफ्फरपुर के कॉलेज से ही आए थे। एक यह वजह थी और दूसरी वजह कि मैं फिर वापस घर मुजफ्फरपुर जाता हूं तो घर वाले इंजीनियरिंग में मेरा दाखिला करा देतें, जो मैं चाहता नहीं था तो स्पेशल क्लास में मेरा नाम लिख दिया प्रिंसिपल ने। मैंने इतिहास से ऑनर्स किया।

नियति में तो मैं विश्वास नहीं करता, वाल्मीकि रामायण मैं बराबर पढता हूं उसमें एक शब्द है यदृक्षा, मतलब होना कुछ और है,संयोग ऐसा कि वह कुछ और हो जाएगा। श्री राम जी को राज्याभिषेक होना था और मंथरा की दृष्टि पड़ गई और वनवास हो गया, वैसे ही वह लंबी कहानी है।

कॉलेज क्लास के कुछ लड़के कौन कितना तेज है की बात को लेकर यूपीएससी में बैठ रहे थें तो मैं भी देख–देखी बैठ गया। मेरी उम्र चूंकि 20 साल ही थी इसलिए आईपीएस में भर सकता था यदि 21 साल उम्र रहती तो मैं आईपीएस का भरता भी नहीं। रिटर्न में हो गया, बिना तैयारी किए इंटरव्यू भी हो गया। तब एक सेंटीमीटर सीना कम था तो मैंने डॉक्टर से कहा कि 5 सेंटीमीटर कम लिख लीजिए मुझे जाना नहीं है। लेकिन ऐसा है कि वह यदृक्षा है ना... मैं पुलिस में चला गया और तब मैं दो–तीन

साल तक बहुत कष्ट में रहा। जैसे कोई बेरोजगार रहे और उसको अचानक नौकरी मिल जाए तो उसका आनंद अलग आता है, लेकिन मैं तो यहां पटना कॉलेज का विद्यार्थी था, जिंदगी में कभी खेलकूद में भी भाग नहीं लिया और वहां चला गया राइफल पकड़ने। उसके बाद फिर अपनी ईमानदारी और आत्मविश्वास के बल पर काम करने लगा। बतौर एसपी पहली पोस्टिंग मेरी आनंद, गुजरात में लगी जहां अमूल प्रोडक्ट बनता है। एडिशनल डीजी के पोस्ट से मैं रिटायर हुआ गुजरात रीजन में। पहली पोस्टिंग ही मेरी संघर्षमय रही। गुजरात में एक मर्डर केस को सुलझाने के दौरान मेरे एक सीनियर ने रिश्वत लेकर आरोपियों को छोड़ देने की सलाह दी। कहा कि आपको खबर मिलती है कि दंगा होनेवाला है तो आप वहां तुरंत 90–100 के स्पीड में पहुंच जाते हैं, अगर गोली चलेगी तो फिर आप इंक्वायरी में फंसिएगा।

उन्होंने अपना अनुभव शेयर किया, मुझे तो खबर मिलती है कि पूर्व में कुछ घटना होने वाली है तो मैं पश्चिम में चला जाता हूं। जब तक पहुंचता हूं तो दो– चार लाशें गिरी रहती हैं। तब मास्टर द सिचुएशन जिसकी मर्जी होगी केस में उसका नाम डाल दूंगा। देसाई साहब का अलग ही सिद्धांत था।

एक बार ऐसा हुआ कि मिसेज इंदिरा गांधी का जिस समय इमरजेंसी लगा हुआ था, गुजरात में चुनाव हुआ और कांग्रेस की गुजरात में हार हो चुकी थी। पटेल लोग, खासकर के वहां का पूरा समाज कांग्रेस के खिलाफ था। तब मेरी ड्यूटी थी वहां बांसकाठा जिले में। जब मैं अपनी ड्यूटी करके लौट रहा था, जहां से मैंने पुलिस की ट्रेनिंग ली थी उस जगह से गुजर रहा था तो देखा पथराव हो रहा था पुलिस की गाड़ी पर।

तो मैं वहां रुका,क्या हुआ देखने के लिए.. . पुलिस पदाधिकारी लोग आए हुए थें। स्थानीय लोगों ने कहा कि एसपी साहब को भेजिए नहीं तो धमाल हो जाएगा। मैंने वहां ट्रेनिंग ली थी तो वहां गया। वहां जो एसपी थे बिहार के थें। उन्होंने मुझसे पूछा कि आप यहां कैसे, आपकी ड्यूटी तो किसी और जिले में है..! मैंने बताया कि ट्रेनिंग यहीं से ली थी इसलिए मैं देखने चला आया।

पत्थरों की बरसात हो रही थी तो वहां पहले डीआईजी इंटेलिजेंस आए। एक–दो मिनट में वहां मिसेज गांधी आईं। उन्हें भी कहा गया कि यहां मीटिंग/सभा नहीं हो सकती लेकिन उन्होंने कहा कि मैं भाषण दूंगी। फिर सभी स्टेज पर गए। वहां 60,000 लोग विरोध कर रहे थें। पत्थर बाजी शुरू हो गई। मैंने वहां रखे टेबल को कवर कर मिसेज गांधी को बचाया। पूरी भीड़ आक्रोशित थी। भाषण नहीं हुआ, वो चुपचाप वहां से चली गईं। रास्ते में मुझे वही पुराने सीनियर देसाई साहब मिल गए जो लस्सी पी रहे थे। मुझसे पूछा कि अरे आप यहां कहां? मैंने बताया कि ड्यूटी से लौट रहा था तो इसी जिले में मैंने ट्रेनिंग ली थी, तो मैंने देखा कि यहां की स्थिति खराब है तो रुक गया..। तो उन्होंने पूछा, फिर क्या हुआ? मैंने कहा कि मिसेज गांधी को आक्रोशित भीड़ से, पत्थरों से किसी तरह बचाया गया। हमलोग कुछ घायल हुए लेकिन मिसेज गांधी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा। इस पर देसाई साहब ने मुझे सलाह दी, इसलिए मैं आपको कहता हूं कि मेरी बात आप मानते नहीं। देखिए मैं अहमदाबाद में आया और फर्स्ट क्लास गेस्ट हाउस में रुका हूं एयर कंडीशन में और शाम में यहां लस्सी पी रहा हूं। अब देखिए इंक्वायरी बैठेगी, आप भी उसमें थें, अब आप पर भी कुछ एक्शन हो जाएगा।" मैंने कहा कि होना क्या है, मैंने तो ड्यूटी की। जो मुझे सही लगा मैंने वह किया।

कुछ अरसे बाद मेरा प्रमोशन हुआ तो आनंद के बाद डीसीपी बनकर मैं चला गया अहमदाबाद में। जब बतौर

एसपी बिहार में मेरी पोस्टिंग हुई तो मुझे दो–तीन महीना के लिए भेज दिया संथाल परगना में तब बिहार और झारखंड एक ही था। तब संथलों के पक्ष में कुछ काम किया।

छात्र जीवन में एक लड़का था मेरा रूममेट सुरेश, वह समाजवादी पार्टी में चला गया और मैं मार्क्सवादी पार्टी में चला गया। वह तो नेता लोगों के यहां आता जाता भी था, मैं कहीं आता जाता नहीं था, मैं लिखने पढ़ने वाला आदमी था। सिर्फ एक बार उसी के साथ कर्पूरी ठाकुर जी से मिलने चला गया फिर एक दो बार उनसे मुलाकात हुई।

हाई स्कूल में मेरी पुस्तकें ही मेरी गुरु होती थीं। एक दिन हमने संस्कृत शिक्षक के बारे में कह दिया कि विद्वान हैं पर पढ़ाते नहीं हैं, नेहरू जी मरे हैं तो नेहरू जी के गुणगान में ही 1 साल बीत गया उनका। उन्हें किसी नारद मुनि ने कह दिया यह बात तो वह मेरे पास आए, उन्होंने मुझे भारी–भारी संस्कृत के नियम दे दिए। मैंने उसे हल भी कर दिया।

मैंने बचपन से लेकर कॉलेज तक पढ़ाई के अलावा और किसी चीज में भाग नहीं लिया।

हाई स्कूल में एक मास्टर आए थें, उन्होंने खेल कंपलसरी कर दिया लेकिन मुझे कोई खेल ही नहीं आता था तो मैं फुटबॉल खेल में रेफरी बन गया। एक बार मेरा स्कूल हार गया मेरी ईमानदारी से तो मुझे बहुत डांट लगी कि ऐसा होता है भला। आठवीं–नौवीं क्लास, हाई स्कूल में एक शिक्षक थें संगीत के। उन्होंने गीत गाना कंपलसरी कर दिया और कहा गाओ नहीं तो छुट्टी नहीं मिलेगी, 4 बजे के बाद क्लास में रुकना पड़ेगा तो मैंने भूषण की कविता प्रवाह पूर्ण सुना दी थी। स्कूली जीवन तक मैंने एक भी फिल्म नहीं देखी थी। कॉलेज में जब मुजफ्फरपुर में था एक सुरेंद्र तिवारी रूममेट थें। वह जबरन पकड़ कर एक बार चलो क्या इतना पढ़ना है.. रूम में भी नहीं पढ़ने देंगे.. चलो मूवी देखने। साथ ले गये। तब साल में एक दो फिल्म देखी थी। फिर पटना आया तो कोई फिल्म नहीं देखी। जब सर्विस में गया गुजरात, आनंद में तो वहां एक सिनेमा हॉल था जिसमें हर शुक्रवार हम पति–पत्नी फिल्म देखने जाते थें। अच्छी फिल्म रही तो पूरी देखते थे और अच्छी नहीं हुई तो फिल्म आधी ही देख लौट जाते थें। इस दौरान दिनभर हमलोग पता करके रखते थे कि आज कहां रेड करना है..। और फिल्म देखने के बाद रेड पर निकल जाते थें। जहां गैंबलिंग हो रही थी, जहां गलत धंधे हो रहे थें...। इससे पहले पुलिस में 9 साल तक तो मैं समझता रहा कि गलत जगह पर आ गया हूं। लेकिन ड्यूटी के दौरान, रेड मारने के पश्चात हमने बहुत सारा पैसा कलेक्ट करके सरकार को दिया। जिस वजह से मुझे बहुत प्रशंसा पत्र हर जगह से मिलें। फिर बिहार में जो मैं आया तो जिस जिले में मेरी पोस्टिंग होती थी मैं वहां पर फिल्म नहीं देखता था। कभी दूसरे जिले में गया तो वहां देख लेता था। 1989 के बाद मैंने फिल्म देखना हमेशा के लिए छोड़ दिया।

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

❐

कॉन्फिडेंस नहीं था कि मैं टीवी में आऊं लेकिन मेरे गुरु का मुझपर बहुत भरोसा था : रतन राजपूत, अभिनेत्री

पटना के मगध महिला से कॉलेज की पढ़ाई पूरी की... पढाई में मन नहीं लगता था। क्या करना है ये ग्रेजुएशन तक मुझे नहीं पता चला। स्कूल कॉलेज में पढाई में पीछे और एक्टिंग ड्रामा में आगे रहती थी। तब एक्टिंग की तरफ शौकिया रुझान था। सीरियस तब हुई जब सोशल प्रेशर आया। पापा के दोस्तों ने टोकना शुरू कर दिया कि पिता अफसर हैं और ये क्या कर रही है?

यही क्या करूँ की तलाश मुझे दिल्ली ले गयी। दिल्ली के नाट्य थियेटर में एडमिशन नहीं हुआ क्यूंकि वहां सर्टिफिकेट माँगा गया। बड़े बड़े एक्टिंग स्कूल और नाट्य–कत्थक केंद्र में भी रिजेक्शन मिला। फिर प्रोफेशनल तो नहीं सिर्फ शौकिया प्ले करना शुरू किया गुरु सुरेन्द्र शर्मा के सानिध्य में। तब घर से पैसे मिल रहे थे। लेकिन मैं माँ–बाप का पैसा बर्बाद नहीं करना चाहती थी। फिर सोचा अब घरवालों के पैसे खर्च नहीं करुँगी। मैंने गुरु सुरेन्द्र शर्मा को असिस्ट करना शुरू किया। तब प्ले करने पर प्रोत्साहन के तौर पर 500 –1000 मिलता था। दूरदर्शन में छोटे मोटे काम शुरू किये। गुरु ने मुझे मुंबई जाने की सलाह दी, लेकिन तब मुझे कैमरे की समझ नहीं थी। कॉन्फिडेंस नही था कि मैं टीवी में आऊं लेकिन मेरे गुरु का मुझपर बहुत भरोसा था।

2008 में मुंबई के लिए रवाना हुई अपने सपनो को पंख देने के लिए। शुरू शुरू में बहुत जोश था, लेकिन जब कभी पैसे कम होते जोश तुरंत ठंढा हो जाता था। तब गुरु फोन पर बात करके उत्साहित करते। वो कहते,–" सफलता किसी एक की जागीर नहीं, तुम्हे भी हक है और उसे लेकर ही रहना है"। फिर मैं ऑडिशन पर ऑडिशन देने लगी, जिन्दगी संघर्षमय थी लेकिन घर में अक्सर झूठ बोलती कि यहाँ सब ठीक है, पैसे की कोई किल्लत नहीं है। वैसे भी मैंने सच्चे दिल से भगवान से जो भी माँगा वो देर से ही सही मुझे जरूर मिला है। सीरियल में एक दो कैमियो करने के बाद मुझे एन. डी. टीवी इमेजिन पर 'राधा की बेटियां कुछ कर दिखाएंगी' में लीड रोल मिला। तब दिल्ली से मुंबई मुझे बेहतर लगने लगा। कई उतार चढाव आये पर हौसला बनाये रखा। उसके बाद धारावाहिक 'अगले जनम मोहे बिटिया ही कीजो' में ललिया के रोल ने मेरी जिन्दगी ही बदल दी। फिर अच्छे काम सामने से ऑफर होने लगे। एन.डी.टीवी इमेजिन पर 'स्वंयवर', स्टार प्लस पर 'महाभारत' में अम्बा का किरदार, बिग बॉस, एम.टीवी.के शो 'फना', से और शोहरत मिली। ❐

प्रस्तुतिः राकेश सिंह 'सोनू'

सिगरेट पीने के सीन में मुझे खांसी होने लगती थी : आर्यन वैध, फिल्म अभिनेता

मेरी पहली फिल्म थी 'सिस्टम' जिसे प्रोड्यूस किया था स्व. झामु सुगंध ने और डायरेक्टर अरविंद रंजन दास थें। लेकिन वह फिल्म किसी वजह से अटक गयी। उस जमाने में अंडरवर्ल्ड का मुद्दा बहुत गंभीर था। तो कहीं ना कहीं माना जा रहा था कि झामु जी की फाइनैंसिंग अंडरवर्ल्ड से आ रही है, उसको लेकर बहुत विवाद हुआ इसलिए वो फिल्म रिलीज होने से पहले ही फंस गयी और बंद हो गयी। उसके बाद मनीषा कोइराला के साथ मेरी फिल्म रिलीज हुई मार्केट। सिस्टम 2001 में शुरू हुई थी। इस फिल्म में मेरे साथ अभिनेत्री थीं सोनाली बेंद्रे। फिल्म की कहानी बहुत अच्छी थी, एक पुलिस इन्स्पेक्टर जो भ्रष्ट नहीं है लेकिन उसको भ्रष्ट बनना पड़ता है भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए। यह जबर्दस्त कहानी खुद डायरेक्टर अरविंद रंजन दास ने लिखी थी। शूटिंग का पहला दिन मुझे आज भी याद है जब डायरेक्टर ने कहा था कि मुझे सिर्फ एक कमरे में चलना है और एक्ट्रेस कश्मीरा शाह को स्टोरी के हिसाब से पकड़ना है। वो सीन करते–करते हमें पूरा दिन लग गया, क्यूंकि अरविंद जी डायरेक्टर बहुत परफेक्शनिस्ट हैं। तो पहला दिन मैं बहुत नर्वस था सेट पर यह सोचकर कि भाई क्या होगा क्या नहीं!

शूटिंग के दरम्यान एक सीन में मुझे साथ में दो सिगरेट जलाने थें जबकि मैं सिगरेट पीता नहीं था। तो डायरेक्टर ने कहा कि 'तुम कोने में जाओ और सिगरेट पीना सीखो फिर ये सीन करो।' तब मैं कोने में जाकर सीख रहा था मगर मुझे उल्टी आ रही थी, बहुत खांसी आ रही थी। मैंने कहा– 'ये मुझसे नहीं होगा सर।' उन्होंने गंभीर होते हुए कहा– 'नहीं, करना ही पड़ेगा। पूरी दुनिया सिगरेट पी लेती है और तुम से ही नहीं हो पा रहा है।' फिर भी मैंने कह दिया, 'मगर मुझसे नहीं होगा।' लेकिन डायरेक्टर साहब बहुत स्ट्रीक्ट थें, मुझे इतनी आसानी से छोड़नेवाले नहीं थें। फिर किसी तरह से मैंने अपनी खांसी पर कंट्रोल किया और वो सीन कर दिया। लोग एक्साइटेड होते हैं अपनी पहली फिल्म को लेकर लेकिन मैं काफी नर्वस था। एक तो मुझे उन डायरेक्टर महाशय से बहुत डर लगता था, ऊपर से अवार्ड विनर और इतने मंझे हुए सीनियर्स एक्टर्स के साथ काम कर रहा था। हर रोज जब सेट पर जाऊं तो मैं सोचता– 'अरे यार, आज फिर मेरे सामने किस महारथी को खड़ा कर दिया।' मेरी कोशिश रहती थी कि मेरी वजह से कहीं रीटेक ना हो। मैं अपनी बहुत तैयारी करके जाता था। मैंने मकरंद देशपांडे जैसे दिगज्जों के साथ थियेटर किया था इसलिए कभी डायलॉग डिलीवरी में दिक्कत नहीं हुई। हाँ, प्रॉब्लम ये आती थी कि

बोलो जिंदगी के संग स्मरण साझा करते आर्यन वैद्य

डायरेक्टर को जिस मूड का डायलॉग चाहिए था वो देना मुश्किल था। अगर उनका मूड कर रहा है कि ये टोन है तो उस टोन को पकड़ना बहुत मुश्किल था। फिर भी डायरेक्टर ने बहुत सपोर्ट किया। ऐसे ही करते–करते फिल्म कम्प्लीट तो हो गयी लेकिन लास्ट के कुछ दो–चार दिनों का काम रह गया था। इतनी मेहनत के बाद बैडलक रहा कि फिल्म रिलीज नहीं हो पायी।

इसके आलावा मैं 'बोलो जिंदगी' को अपनी पहली भोजपुरी फिल्म का अनुभव भी शेयर करना चाहूंगा। फिल्म का नाम है 'तिरंगा पाकिस्तान का' जिसकी शूटिंग 2015 में कम्प्लीट हुई थी। इस फिल्म के डायरेक्टर भी वही फिल्म 'सिस्टम' फेम अरविंद रंजन दास ही हैं जो पटना, बिहार के हैं। मैं उस वक्त अमेरिका शिफ्ट हो चुका था तो मैंने तकरीबन 11 महीना अमेरिका में गुजारने के बाद जब इंडिया लैंड किया तो अचानक से मेरे पास ऑफर आया कि 7–8 दिन बाद चलिए बिहार और वो भी राजधानी पटना नहीं बल्कि छोटे से कस्बे जन्दाहां में भोजपुरी फिल्म करने। चूँकि इससे पहले मैं तेलगु फिल्म भी कर चुका था तो सोचा कि चलो भोजपुरी का जायका भी ले लिया जाये। उन दिनों बहुत ही कमाल का एक्सपीरियंस रहा। सबसे यादगार ये रहता था कि वहां गांव में हमारे डायरेक्टर साहब सुबह 7 बजे का शिफ्ट लगा देते थें। मैं और मेरा मित्र मिंटू किसी तरह भागकर गंगा सेतु पर पागलों की तरह गाड़ी चलाकर सेट पर पहुँचते थें। फिर दोपहर में 12 –1 बजे एक्सरसाइज के लिए मैं कुछ समय निकाल लेता था। हमारे जो लीड एक्टर थें शांडिल्य ईशान उनका वेट का सामान वही एक स्कूल के कमरे में रखा था। जहाँ हम एक्सरसाइज करते वहां पर लाइट आ–जा रही थी और ना ही जेनरेटर की व्यवस्था थी। तब उस दोपहर की कड़क गर्मी में ऐसा लगता जैसे कोई टॉर्चर चेंबर में हूँ। करीब एक महीना जन्दाहां में शूटिंग चली। पूरी यंग यूनिट थी इसलिए माहौल में मस्ती थी, सभी शूटिंग खत्म होने के बाद मस्ती भी करते सिवाए डायरेक्टर के क्यूंकि वो सिर्फ काम में ही डूबे रहते थें। ❐

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

संस्मरण

मैं बिना दहेज के एक आईएएस बेटे की बहू बनी थी

(स्व.) डॉ. पूर्णिमा शेखर सिंह, पूर्व निदेशक, सेंटर फॉर ज्योग्राफिकल स्टडीज, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

मेरा मायका पटना तो ससुराल विद्यापति नगर के पास चमथा गांव में है। ऐसे देखा जाये तो हमारा ससुराल बेगूसराय है लेकिन वो गाँव चार जिलों का बॉर्डर छूता हुआ है। हम 5 भाई–बहन हैं। पिताजी स्व.श्याम नारायण सिंह हाईकोर्ट में नौकरी किया करते थें। पटना के गोलघर के पास स्थित बांकीपुर बालिका विधालय से मैंने मैट्रिक किया था काफी अच्छे नंबरों से और इंटरमीडिएट मैंने पटना वीमेंस कॉलेज से किया। फिर ग्रेजुएशन किया भूगोल में पटना कॉलेज से। उसके बाद मैं पी.जी. की पढ़ाई करने जे.एन.यू. दिल्ली चली गयी क्यूंकि मैंने सुना था कि वहां बहुत अच्छा स्कोप है और काफी अच्छी पढ़ाई होती है। पी.जी. के बाद मैंने एम.फील. और फिर पी.एच.डी. किया। जब एम.फील. में एडमिशन लिया था उसी समय 1981 में मेरी शादी हो गयी।

पति अंजनी कुमार सिंह (पूर्व मुख्य सचिव, बिहार) से वहीँ मेरी जान–पहचान हो चुकी थी। हमारी सोच, हमारी रूचि और हमारी शिक्षा में बहुत समानता थी और उसी वजह से हम एक–दूसरे के बहुत अच्छे दोस्त भी बन गए थें। जब हमारे घरवालों को हमारे बारे में पता चला तो हमारी शादी की बात चली। उस वक्त तो जाति–प्रथा बहुत जोरों पर थी और संयोग से हमारी जाति भी समान थी। फिर इतनी सारी समानताओं की वजह से हमारे परिवारों ने आसानी से इस रिश्ते को एक्सेप्ट कर लिया। पढ़ाई के दौरान ही मेरी शादी हुई थी इसलिए ससुराल में हम 10–15 दिन

ही रहें फिर बीच–बीच में गांव–ससुराल के कार्यक्रमों में शामिल होने आते रहें। चूँकि पति की नौकरी थी इसलिए हमको गांव में ज्यादा रहने का मौका नहीं मिला। पहली ट्रेनिंग पति की पूर्णिया में थी फिर दूसरे फेज की ट्रेनिंग के लिए वे मसूरी चले गएँ तब तक मेरा एम.फील हो रहा था। मैंने एम.फील कम्प्लीट किया और पति की पहली पोस्टिंग हजारीबाग में हुई। मैं उच्च शिक्षा हासिल करने में लग गयी और यू.जी.सी. का जेआरएफ नेट कम्प्लीट किया।

मेरा ससुराल मिथिलांचल का एक हिस्सा है। मेरे पति का घर काफी बड़ा था और परिवार भी संयुक्त था जो हाल–फिलहाल में एकल हुआ है। लेकिन तब भी और अब भी सभी एक आँगन में ही रहते हैं। जब मैं शादी के बाद पहली बार ससुराल गयी तो पति के बहुत सारे रिश्ते की भाभियाँ हमसे कई तरह के विध करवा रही थीं। बहुत रोचक अनुभव था। उन सभी का व्यवहार इतना मीठा था कि अनुभव नहीं हो पाया कि कौन चचेरी भाभी हैं और कौन पति की अपनी भाभी हैं। मैं बहुत प्रभावित थी क्यूंकि मेरा थोड़ा शहर का बैकग्राउंड था और मैं एकल परिवार से थी। मुझे सभी लोगों का आपस में जुड़ाव देखकर बहुत अच्छा लगा। पटना के परिवेश में इतना सहयोग–मिठास देखने को नहीं मिलता था। मेरे पति ने जब आईएएस कम्प्लीट किया था तो उस बात की गूंज पूरे इलाके में थी। मैं जबतक वहां रही तो दूर–दूर से विभिन्न टोलों से महिलाएं आती रहीं और आकर मेरा चेहरा घूंघट उठाकर आँखें मुंदवाकर देखती रहीं। तब मुझे अंदर से बहुत हंसी भी आती थी। लेकिन मैं किसी भी तरह का कोई विरोध–प्रतिरोध नहीं करती थी। क्यूंकि वहां मैंने देखा इतना सुन्दर सबों का व्यवहार। मैं उन सभी चीजों का सुखद रूप से इंज्वाय कर रही थी। गांव से महिलायें आकर टिका–टिप्पणी करतीं कि बहू की आँख कैसी है, बहू की नाक कैसी है। विस्तार से बताती थीं। एक फिजिकल एपियरेंस होता है उसको देखती थीं। मुझे भी तरह–तरह बात–व्यवहार वाली महिलाओं को देखने का मौका मिला, बहुत अच्छा लग रहा था।

उस दौरान गांव में एकदम पानी नहीं पड़ रहा था, लगभग सूखे की स्थिति हो चली थी। फिर जब मेरी शादी हुई तो उसके बाद इतनी मूसलाधार बारिश हुई कि पूरा इलाका बाढ़ से एकदम डूब गया था। चूँकि पति का

संयुक्त परिवार था तो उनके सारे बहन–बहनोई, उनके पूरे परिवारवाले दूर–दूर से आये थें। उतने सरे लोगों का एक ही जगह खाना बनता था। बारिश से घर का आँगन चारों ओर से भींगकर कीच–कीच हो जाता था। उतने लोगों के कपड़े सुखाने की दिक्कत होती थी, रहने की दिक्कत भी होती थी। परेशानियां तो थीं लेकिन फिर भी पूरे गांववाले बड़े खुश थें कि "दुल्हन का लक्षण बहुत अच्छा है, इनका पांव पड़ते ही इतनी बारिश हुई, सूखी धरती की प्यास बुझ गयी।"

हमारी एक छोटी ननद थीं जो अब नहीं हैं, उनके साथ मेरी बड़ी मधुर स्मृतियाँ थीं। वो मुझपर बहुत गर्व महसूस करतीं और मुझे कभी छोड़कर जाती ही नहीं थीं। उनको मेरी हर चीज बहुत सुंदर लगती थी। मेरा पहनने का तरीका, मेरा बाल सँवारने का तरीका, मेरा साज–श्रृंगार–गहने सारी चीजों से वो प्रभावित और खुश होती थीं। पूरा दिन मेरे इर्द–गिर्द मेरे साथ रहती थीं, सिर्फ सोने के समय मुझे छोड़ती थीं। वे अपनी सहेलियों को बुला–बुलाकर लातीं और तब उनकी बहुत छोटी–छोटी उम्र की सहेलियां मुझे देखने आती थीं। और उनसब के साथ खूब हंसी–ठिठोली होती थी। मेरी बड़ी गोतनियां भी बड़ी कर्मठ थीं और वे काम करने के दरम्यान ही बीच–बीच में मजाक में ही मेरे हसबैंड को छेड़ देती थीं जो तब मुझे उतना समझ नहीं आता था क्यूंकि वो मैथली में बोलती थीं।

हम शादी करके जब गांव गए तो वहां पर सत्यनारायण भगवान की कथा हुई। वहां मैंने देखा कि शीतल प्रसाद जो हमारे घर में आमतौर पर कटोरे में बनता है वहां एकदम बड़े से दो टब में पूरा दूध–केला, भूना आटा, काजू–किशमिस डालकर तैयार किया जा रहा है। फिर जिसको जितना पीना है भरपेट ग्लास, जग से पिए। पूरे गांव में वह बाँटा गया। ये मेरे लिए बहुत आश्चर्यजनक था। हमारी सास जो थीं बड़ी चुप–चुप रहनेवाली थीं लेकिन वो बड़ी उदार थीं। हमलोगों की शादी तब बिना दहेज के हुई थी और उन्होंने कोई भी दहेज की मांग नहीं की। वो बेटे की खुशी से ही संतुष्ट थीं। ये बहुत बड़ी बात थी कि किसी का बेटा आईएएस हो जाये और जिसका पूरे इलाके में इतना नाम हो और उस दौरान वैसे वर को जब दहेज से तौले जाने का रिवाज था मैं बिना दहेज के शादी करके आयी थी। फिर भी सभी लोगों ने मुझे हाथों–हाथ लिया। बहुत प्यार–स्नेह दिया।

चूँकि मेरे पति कोई बहुत अमीर परिवार के भी नहीं थें और उनके पिता का भी देहांत हो चुका था। तब उनके यहाँ कोई कमानेवाला भी नहीं था। वे घर–खानदान में पहले थें जो इस तरह की नौकरी पकड़े थें। इसलिए मैं हमेशा अपने ससुरालवालों की शुक्रगुजार रहूंगी कि मेरे गुणों को महत्ता दी गयी ना कि दान–दहेज के। तो मुझे लगता है आज से कितने बरस पहले जब दहेज प्रथा का इतना बोलबाला था तब नारी को बिना दहेज आने पर इतना सम्मान मिलना यह बहुत बड़ी बात है। जबकि आज हमें दहेज ना लेने–देने का कठोर कानून लागू करना पड़ रहा है। पहले ससुरालवालों के मन में भी कहीं–ना–कहीं यह आशंका थी कि शहर की पढ़ी–लिखी बहू कैसी होगी लेकिन मेरे में क्षमता थी एडजस्ट करने कि क्यूंकि मैं पहले से बहुत ऊँचा व बड़ा ख्वाब लेकर नहीं गयी थी। मेरे व्यवहार की वजह से आज वही लोग ये कहा करते हैं कि साहब (मेरे पति) जिस ऊंचाई को आज छू रहे हैं उसमे मेरा भी बहुत योगदान है। ❐

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

हर्ष, उमंग एंव सद्भावना का त्यौहार : लोहड़ी

✍ **बलविन्दर बालम,**
ओंकार नगर, गुरदासपुर (पंजाब)

लोहड़ी शब्द लोही से बना जिस का अभिप्राय है वर्षा होना, फसलों का फूटना। एक लोकोक्ति है अगर लोहड़ी के समय वर्षा न हो तो कृषि का नुकसान होता है। परम्परा के गुलशन से ही जन्म लेता है लोहड़ी का त्यौहार। यह त्योहार मौसम के परिवर्तन, फसलों का बढ़ना तथा कई ऐतिहासिक दन्त कथाओं से जुड़ा हुआ है। मुख्य तौर पर भारत का प्रसिद्ध राज्य पंजाब कृषि प्रधान राज्य है। इसी वजह से किसानों, जमींदारों एंव मजदूरों की मेहनत का पर्यायवाची है लोहड़ी का त्यौहार। लोहड़ी समस्त मजहबों, धर्मों के लिए एकता का प्रतीक तथा संस्कृति का एक भव्य उपहार है।

लोहड़ी माघ महीने की सक्रांति से पहली रात को मनाई जाती है। किसान सर्द ऋतु की फसलें बोकर आराम फरमाता है। जिस घर में लड़का पैदा हुआ हो उसके शगुन एंव हर्ष से लोहड़ी पाई जाती है। बैंड बाजे बजाए जाते हैं। बाजीगरनें एंव भांड रिश्ते–नातों के गीत सुनाकर हास्य–व्यंग्य के विनोद गायन सुनाकर अपनी बनती लोहड़ी (बधाई) बटोर कर ले जाते हैं। इस दिन प्रत्येक घर में मुंगफली, रेवड़ियों, चिरवड़े, गच्चक, भुग्गा, तिलचौली, मक्की के दाने, गुड़, फल इत्यादि लोहड़ी बांटने के लिए रखे जाते हैं। गन्ने के रस की खीर बनाई जाती है। दही के साथ इस का स्वाद अपना ही होता है। जिस नवजन्मे बच्चे के लिए लोहड़ी पाई जाती है उसके रिश्तेदार उसके लिए सुन्दर वस्त्र, खिलौने तथा जेवरात इत्यादि बनवाकर लाते हैं।

आजकल तो लड़कियों की लोहड़ी भी खुशी एंव उमंग से पाई जाती है। विकसित परिवारों में लड़की की लोहड़ी का चाव लड़के से कम नहीं करते। रिश्तेदार लड़की को आभूषण एंव सुन्दर वस्त्र देते हैं। खासकर के लोहड़ी वाली लड़की को पाजेबें देना शुभ शगुन समझते हैं। इस दिन घरों के आंगनों, संस्थाओं, जुंडलियों, मुहल्लों, बाजारों इत्यादि में खड़ी लकड़ियों के ढ़ेर बनाकर या उपलों का ढ़ेर बनाकर या उसकी अग्नि से सेंक का लुत्फ लिया जाता है। चारों और बिखरी सर्दी तथा रूई की भान्ति फैली धुंध में अग्नि के सेंक का अपना ही आनंद होता है। इस अग्नि में तिल इत्यादि फेंकते हैं। घरों में समस्त परिवार बैठकर हर्ष की अभिव्यक्ति के लिए गीत गायन करते हैं। देर रात तक ढ़ोलक की आवाज, ढ़ोल के फड़कते ताल, गिद्दों–भंगड़ों की धमक तथा गीतों की आवाज सुनाई देती रहती है। रिश्तों की सुरभि, मोह–ममता तथा प्यार का नजारा चारों ओर देखने को मिलता है। एक सम्पूर्ण खुशी का आलम।

लोहड़ी के त्योहार के साथ जुड़ी कई कथाएं प्रचलित हैं। एक प्रसिद्ध डाकू दूल्हा भट्टी ने एक निर्धन ब्राह्मण की दो बेटियों सुन्दरी एंव मुन्दरी को

जालिमों से छुड़ाकर उनकी शादियां कीं तथा उनकी झोली में शक्कर डाली। उन निर्धन बेटियों की शादियां कर के पिता के फर्ज निभाए। इस सम्बध में एक लोकगीत अब भी प्रचलित है जैसे,

सुन्दर मुन्दरिए, हो, तेरा कौन बेचारा–होः दुल्ला भट्टी वाला–हो, दुल्ले ने धी बेआही–हो, सेर शक्कर पाई–होः कुढ़ी दे बोझे पाई–होः कुढ़ी दा लाल पटाका–होः कुढ़ी दा शालू पाटा–होः शालू कौन समेटे–होः चाचा गाली देसे होः चाचे चूरी कुट्टी होः सेर शक्कर पाई होः, जिमींदारां वहुटी–होः, जिमींदार सदाओ–होः गिन–गिन पोले लाओ–होः इक पोला घस गया, जिमींदार वहुओ लै के नस्स गयाः हो–हो–हो–हो–हो– हो–हो– हो।

लोहड़ी वाले दिन बुजुर्ग लोक सुन्दरी–मुन्दरी की कथा भी सुनाते हैं। किस तरह दुल्ला भट्टी डाकू ने निर्धन लड़कियों का विवाह कर के अपना धर्म निभाया। लोहड़ी के कई परम्परावादी गीत प्रचलित हैं जैसे, **लोहड़ी बई लोहड़ी, दिओ गुड़ दी रोड़ी, कलमदान विच घिओ, जीवे मुंडे दा पियो, कलमदान विच कांना, जीवे मुंडे दा नाना, कलमदान विच कांनी, जीवेम मुंडे दी नानी।**

लड़के–लड़कियां भी इस दिन लोहड़ी मांगते हैं। ग्रुप बनाकर लोहड़ी मांगने का अपना ही एक मजा होता है। बेशक लोहड़ी के गीत अलोप होते जा रहे हैं परन्तु वृद्ध–जनों को आज भी यह गीत जुबानी याद है जैसे, **कोठी हेठ चाकू, गुड़ दऊ मुंडे दा बापू। कोठी उत्ते कां, गुड़ दऊ मुंडे दी मां।**

विवाहित जोड़ों (दम्पति) की भी लोहड़ी पाई जाती है। इस पर एक लोक गीत है,

टांडा नी लकड़ियों टांडा

सी, इस टांडे नाल कलीरा सी, जुग जीवे नी बीबी तेरा वीरा सी, इस वीरे दी वेल वदाई सी, घर चूड़े ते बीढ़े वाली आई सी, चूड़ा बीढ़ा वज्जे नी, शरीकनियां नूं सद्दे नी, शरीकनियां मारे बोल, तरा निक्का जीवे, तेरा बड्डा जीवे, वड्डा वड़ेरा जीवे, गुड़ दी रोड़ी देवे, भाईयां दी जोड़ी जीवेम।

लोहड़ी वाले घर से अगर जल्दी लोहड़ी न मिले तो लड़कियां यह गीत कहती हैं– **साड़े पैरां हेठ रोढ़, सानूं छेती–छेती तोर, साड़े पैरां हेठ दहीं, असीं मिलना वी नईं, साड़े पैरां हेठ परात, सानूं उत्तों पै गई रात।** लड़का पैदा होने पर लड़कियां व्यंग्य–विनोद में उस के परिवार को इस गीत से सम्बोधन करती हैं, **गीगा लकड़ी दा शाबा, वे लड़ाका तेरा बाबा, गीगा तत्ता–तत्ता घिओ, वे लड़ाका तेरा पिओ, गीगा गोरी–गोरी गां, वे लड़ाकी तेरी मां।** इस तरह कुछ और गीत जैसे, **कुपिए नीं कुपिए, असमान ते लुट्टिए, असमान पुराना, छिक् बन्ना ताना, लंगरी च दाल, मार मत्थे नाल, मत्था तेरा बड्डा, लेआ लकड़ियां दा गठ्ठा।**

लोहड़ी के दिन लड़के स्वांग बनकर नाचते गाते भी लोहड़ी मांगते हैं। लोहड़ी के दूसरे दिन माघी का पवित्र त्योहार मनाया जाता है। माघ माह को शुभ समझा जाता है। इस माह में विवाह शुभ माने जाते हैं। इसी माह में पुन्य दान करना, खास करके लड़कियों की शादी करना शुभ माना जाता है। इस माह में नवयुवकों को खूब खुराक खानी चाहिए। ठिठुरती सर्दी में रजाई का आनन्द, गन्ने का रस, मूली, गाजर इत्यादि खाने का मजा भी इसी महीने आता है। चावल की खिचड़ी, सरसों का साग, मक्की की रोटी और मक्खन खाने का जायका भी कमाल का होता है।

माघी का मेला अनेक शहरों में मनाया जाता है। खास करके मुक्तसर (पंजाब) में। सिक्खों के पांचवें गुरू श्री अर्जुन देव जी ने माघ माह की बारह माह बाणी में प्रशंसा की है, माघ मंजन संग साधुआं धूढ़ी कर इस्नान.. इत्यादि। श्री कृष्ण भगवान ने गीता के आठवें अध्याय में भी माघ माह का अति सुन्दर वर्णन किया है– अग्नि ज्योंतिरह शुक्ल, वण्मासा उतरायणन। माघ से लेकर छः माह का समय उत्तरायणमय कहलाता है जिस में ब्रह्म को जाननेवाले लोग प्राणों का त्याग कर मुक्त हो जाते हैं। प्रयाग तीर्थ में महात्मा लोग प्रकल्प करते हैं। लोहड़ी का त्यौहार भारत में ही नहीं विदेशों में भी धूम धाम से मनाया जाता है। ❐

भारतीय मूल के छह सांसदों ने ली अमेरिकी सदन की शपथ

6 भारतीय अमेरिकी नेताओं ने अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के सदस्य के रूप में शपथ ली। पहली बार इतनी बड़ी संख्या में भारतवंशी नेताओं को निचली सदन में जगह मिली। इनमें डॉक्टर एमी बेरा, सुभाष सुब्रमण्यम, श्री थानेदार, रो खन्ना, राजा कृष्णमूर्ति और प्रमिला जयपाल शामिल हैं। सांसद डॉक्टर एमी बेरा ने सोशल मीडिया पर सभी 6 भारतीय अमेरिकी सांसदों की एक तस्वीर पोस्ट की। उन्होंने कहा उम्मीद है आनेवाले वर्षों में हम भारतीयों की संख्या और बढ़ेगी। प्रतिनिधि सभा के सदस्य के तौर पर सुभाष सुब्रमण्यम ने पहली बार शपथ ली। खन्ना, कृष्णमूर्ति व जयपाल तीनों लोगों ने लगातार पांचवीं वर्ष शपथ ली है। अमेरिका में 2020 के चुनाव में चार भारतवंशी जीते थे। वर्ष 2020 में हुए राष्ट्रपति चुनाव में चार भारतीय मूल के सांसद चुने गए थे। चारों भारतीय अमेरिकी डेमोक्रेटिक सांसद डॉक्टर एमी बेरा, प्रमिला जयपाल, रो खन्ना और राजा कृष्णमूर्ति अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के लिए फिर से निर्वाचित हुए थे।

दिलीप सिंह 1957 में प्रतिनिधि सभा के लिए चुने जाने वाले पहले भारतीय अमेरिकी और सिख थे। वह डेमोक्रेटिक पार्टी से थे और लगातार तीन कार्यकाल के लिए चुने गए थे। दूसरे भारतवंशी को अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में प्रवेश करने में करीब 5 दशक लग गए। बॉबी जिंदल ने वर्ष 2005 से 2008 तक लुई सियाना के पहले कांग्रेस नेशनल जिला का प्रतिनिधित्व किया। बाद में वह लुई सियाना के दो कार्यकाल वाले गवर्नर बने जिससे वह किसी अमेरिकी राज के गवर्नर के रूप में चुने जानेवाले पहले भारतीय अमेरिकी बन गए। ❐

भिखारी ठाकुर एक नारा नहीं, एक विचार हैं

भिखारी ठाकुर सामयिक और शाश्वत दोनों हैं

जन्मतिथिः 18 दिसबंबर 1887 पुण्यतिथिः 10 जुलाई 1971

✍ मनोज भावुक
भोजपुरी सिनेमा के इतिहासकार,
फिल्म गीतकार व
भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक

भिखारी ठाकुर को लोगों ने देवता बना दिया है। देवता बनाने से व्यक्ति लोक से कट जाता है। भिखारी लोक मर्मज्ञ थे। लोकमंच के पुरोधा थे। भोजपुरी रंगमंच के अग्रदूत व संस्कृति के क्रांतिदूत के रूप उन्हें याद किया जाय। उन्हें याद करने का सबसे अच्छा तरीका लोक से जुड़कर ही पूरा किया जा सकता है। लोक से इतर भिखारी की कल्पना नहीं की जा सकती।

यह भिखारी ठाकुर का लोक कनेक्शन ही है कि उनकी मृत्यु के 53 साल बाद भी उनकी लोकप्रियता का ग्राफ दिन पर दिन ऊपर ही जा रहा है। भले ही उनका नाम भिखारी है, लेकिन आज भोजपुरी में उनसे अमीर आदमी कोई नहीं है। करोड़ो रुपये खर्च करके भी इस तरह की ब्रांडिंग संभव नहीं है। जिसे भोजपुरी का 'भ' या भिखारी का 'भि' भी नहीं पता, वह भी भिखारी ठाकुर की जय, भिखारी ठाकुर की जय .. जय जयकार कर रहा है। भिखारी ठाकुर ट्रेंडिंग में हैं। आप कह सकते हैं कि वह भोजपुरी के 'दिवंगत ट्रेंडिंग स्टार' हैं। भिखारी एक 'नारा' हो गए हैं, जबकि भिखारी एक 'विचार' हैं।

चारो तरफ नारेबाजी है और भिखारी की लहर है। ऐसी लहर कि जिसे देखो, जहाँ देखो 'भिखारी ठाकुर महोत्सव' कर रहा है। भिखारी ठाकुर के नाम पर थोक में अवॉर्ड बाँटे जा रहे हैं। ऐसे लोगों को भी अवॉर्ड दिया जा रहा है, जिनका कला–साहित्य–रंगमंच से कोई सरोकार नहीं है। जैसे हिन्दी में निराला के नाम पर ऐसे लोगों को भी अवॉर्ड दिया जाता है, जिनके जीवन या व्यक्तित्व–कृतित्व में कुछ भी निराला नहीं है। भिखारी ठाकुर परसादी हो गए हैं।

क्या सरकारी, क्या गैर सरकारी अधिकांश संस्थाएं इसी ढंग के आयोजन में लगी हैं। कार्यक्रम में चार चाँद लगाने के लिए संगीत–सिनेमा के स्टार, सुपरस्टार, पॉवर स्टार, ट्रेंडिंग स्टार, जुबली स्टार इकट्ठा होते हैं। 'भिखारी ठाकुर सम्मान' से सम्मानित होते हैं। भिखारी बाबा का गुणगान किया जाता है, उनकी प्रतिमा पर फूल–माला चढ़ाया जाता है, उनके आदर्शों की बात होती है और फिर गाना–बजाना होता है कि "नीबू खरबूजा भइल", "कमर डैमेज", "ओढ़नी में कोड़नी" आदि–इत्यादि।

भिखारी ठाकुर ने तो कभी अश्लील नहीं गाया, लेकिन भोजपुरी में आज तक उनसे बड़ा कोई इंटरटेनर नहीं हुआ। यह बात भोजपुरी अल्बम और फिल्म इंडस्ट्री को क्यों नहीं समझ में आती है! भिखारी ठाकुर ने समाज की समस्याओं को अपने नाटकों का विषय बनाया और उन्हीं समस्याओं पर गीत रचे। और तब की भीड़ को आज के व्यूज के हिसाब से देखें तो दूर–दराज से लोग उनका नाटक देखने आते थे, खचाखच भीड़ होती थी। पैसे की बात करें तो सबकी औकात नहीं थी कि भिखारी ठाकुर की नाचमण्डली को हायर कर सकें। खूब दबाकर पैसा लेते थे भिखारी

ठाकुर। अपनी शर्तों पर काम करते थे और आदर–सम्मान के साथ बुलाए जाते थे, हिंदुस्तान ही नहीं, दुनिया के कई देशों में। लोकप्रियता ऐसी कि आम तो आम, खास लोग भी उनकी कला के मुरीद थे। तभी तो राहुल सांकृत्यायन ने उन्हें ' भोजपुरी का अनगढ़ हीरा' कहा, अंग्रेजी के प्रकांड विद्वान प्रो. मनोरंजन प्रसाद सिन्हा ने उन्हें ' भोजपुरी का शेक्सपियर ' कहा, डॉ. उदय नारायण तिवारी ने ' भोजपुरी का जनकवि ' तो जगदीश चन्द्र माथुर ने भरतमुनि की परंपरा का बताया। यहाँ तक कि अंग्रेजों ने राय बहादुर के खिताब से सम्मानित किया। भिखारी तब भी सम्मानित थे और आज भी सम्मानित हैं और दिन पर दिन उनकी ख्याति, उनका सम्मान बढ़ता ही जा रहा है। यह बात आज की भोजपुरी फिल्म व गीत–संगीत इंडस्ट्री के पल्ले क्यों नहीं पड़ती? कंटेन्ट ही बोलता है। चाहे कितना भी व्यूज आ जाय, घटिया कंटेन्ट आपको आपके जीवन काल में ही मार देगा। भिखारी ठाकुर इसलिए अमर हैं, इसलिए लोकप्रिय हैं, क्योंकि उन्होंने लोक की पीड़ा को महसूस किया और उसे गाया। नारी मन को तो उनसे बेहतर किसी ने आज तक समझा ही नहीं। बेटी बेचवा का गीत– ' रूपिया गिनाई लिहले, पगहा धराई दिहले .. चेरिया के छेरिया बनवले हो बाबूजी ' या बिदेसिया के बारहमासा में एक स्त्री के बारहो महीने और आठों पहर के दुख को जिस तरह से भिखारी ने पकड़ा है, वह किसी और के बस की बात नहीं है या ' डगरिया जोहत ना हो डगरिया जोहत ना, बीतत बाटे आठ पहरिया हो डगरिया जोहत ना' / के हो हमरा जरिया में भिरवले बाटे अरिया हो, चकरिया दरी के ना, दुख में होता जँतसरिया हो, चकरिया दरी के ना .. गीत देखिए। भिखारी ठाकुर ने नारी मन को स्कैन किया और गीत बनाये। .. और हमारी अभी की फिल्म इंडस्ट्री नारी देह को स्कैन कर रही है और गीत बना रही है।

भिखारी ठाकुर से सीखने की जरूरत है। वैसा होना दुर्लभ है। रंगमंच के क्षेत्र में भी वैसा कोई दूसरा नहीं हुआ। वह एक कंप्लीट पैकेज थे– एक साथ नाटककार, गीतकार, संगीतकार, निर्देशक, रिसर्चर, अभिनेता, सूत्रधार और इवेंट मैनेजर, टीम लीडर सब कुछ। इससे भी ज्यादा गहराई में उतरकर देखेगें तो वह आपको नवजागरण के पुरोधा के रूप में नजर आयेगें। नाटक या गीत लिखने से पहले यह समझना जरूरी है कि हमें किन विषयों पर लिखना है और उसका असर क्या होगा ! विषय का चुनाव और उसकी शानदार प्रस्तुति ने ही भिखारी ठाकुर को अमरत्व प्रदान किया है।

यहाँ दुखद यह है कि भिखारी ठाकुर को लोगों ने एक नचनिया–बजनिया या नौटंकी वाले के रूप में ज्यादा देखा, उनके नाटकों को मनोरंजन के लिहाज से ज्यादा पढ़ा। अगर उन्हें नवजागरण या पुनर्जागरण का पुरोधा मानकर पढ़ा–लिखा या मंचन किया जाय तो हम उनके साहित्य के मर्म को ज्यादा समझ पायेगें।

भिखारी ठाकुर पढ़े नहीं थे, गढ़े थे जैसे कि संत कबीर। और इन दोनों लोगों के साहित्य को पढ़िए तो पता चलेगा कि ये सामयिक भी हैं और शाश्वत भी।

इधर कई वर्षों से गोष्ठियों और सेमिनारों में भिखारी ठाकुर की प्रासंगिकता को लेकर विमर्श होता रहा है। 17 दिसंबर 2024 को भी दिल्ली के एलटीजी ऑडिटोरियम में बिदेसिया नाटक के मंचन के पूर्व इस विषय पर परिचर्चा आयोजित थी। वक्ता के रूप में मै भी आमंत्रित था। मैंने भिखारी के कई नाटकों का जिक्र करके उन्हें प्रासंगिक बताया। जैसे कि 'बिदेसिया' में प्रवास और पलायन की समस्या है, वह आज भी बरकरार है और लोग रोजी–रोजगार के लिए अपनी मातृभूमि से दूर जाने के लिए आज भी विवश हैं। 'बेटी–बेचवा' नाटक का जिक्र करते हुए कहा कि अब तो 'बेटी–बेचवा' के साथ 'बेटा–बेचवा' भी हैं। रिश्ते की बुनियाद में पैसा होगा तो अनमेल शादियाँ होगीं ही। सामान्य परिवार के बहुत सारे बाप योग्य और बड़े पद पर कार्यरत बेटे की शादी धन के लालच में ऐसी लड़की से कर देते हैं कि लड़के का जीवन ही बर्बाद हो जाता है। 'पियवा निसइल' में नशाखोरी की वजह से घर बर्बाद होने की बात है, वह समस्या आज भी बरकरार है। इसीलिए नशामुक्ति केंद्र बढ़ते जा रहे हैं। आज सेरोगेसी और डीएनए टेस्ट की बात हो रही है, 'गबरघिचोर' में बेटा किसका है, इसी समस्या पर पूरा नाटक है। 'गंगा स्नान' ढोंगी साधु की कहानी है। आज भी ढोंगी–पाखंडी बाबाओं की कमी नहीं है और आज भी वह भोले–भाले मासूम लोगों को अपना शिकार बना रहे हैं। 'भाई–विरोध' में कुटनी की वजह से संयुक्त परिवार के टूटने का जिक्र है, तो आज भी परिवार टूट ही रहा है, बल्कि पहले से ज्यादा। इसलिए निःसंदेह भिखारी ठाकुर आज भी प्रासंगिक हैं, लेकिन प्रासंगिक होना हर हाल में कोई अच्छी बात नहीं है। जो बीमारी, जो समस्या सौ–डेढ़ सौ साल पहले थी, वह आज भी बरकरार है तो कौन सी अच्छी बात है! मै तो ईश्वर से प्रार्थना करूँगा कि इन समस्याओं का अंत हो और भिखारी अप्रासंगिक हो जाएँ।

'रेलिया बैरन पिया को लिए जाय रे' .. यह कोई उत्सव का गीत नहीं है। यह प्रवास की पीड़ा और पलायन का दर्द है। इसी साल छठ पर मेरा भी एक

गीत रिलीज हुआ, इसी पीड़ा से उपजा हुआ। गीत का बोल है– जागे यूपी बिहार। भिखारी ठाकुर की पावन स्मृति को नमन करते हुए वह गीत आप सबके साथ साझा कर रहा हूँ–

गीत, मनोज भावुक

छुट्टी खातिर कहिया ले अर्जी लगइबे,
कहिया ले जोड़बे तू हाथ
कहिया ले रेलिया रहि इहाँ बैरन,
कहिया मिली सुख के साथ
छठी मइया दिहीं ना असीसिया जागे
यूपी–बिहार।
भटके ना बने–बने लोगवा, मिले गाँवे
रोजगार
रोटी के टुकड़ा के जिनगी रखैल,
रहि–रहि के हँकरत बा कोल्हू के बैल
दुनिया के स्वर्ग बनवलें बिहारी,
काहे अपने धरती प भइलें भिखारी?
चमकल मॉरीशस, दिल्ली, बंबे,
चमके अपनों दुआर, चमके
यूपी–बिहार।

अँगना में माई उचारेली कउवा,
कब अइहें बबुआ पुकारेली नउवा
नोकरी के चक्कर में का–का बिलाता,
बंजर भइल जाता सब रिश्ता–नाता
माई संगे ठेकुआ बनाईं,
माई हमके धरे अँकवार।

गँउआ के धरती पड़ल बाटे परती,
ओही जी उगाईं सोना–चानी
ओही जी बनाईं अब महल–अटारी,
जहाँ बाटे टूटही पलानी
केतना सिखवलस कोरोनवा,
सुनीं गाँव के पुकार।

जब मैं नौकरी करने लंदन गया था, तब भी ऐसा ही एक गीत लिखा था–

बदरी के छतिया के चीरत जहजवा से
अइली फिरंगिया के गाँवे हो संघतिया
लंदन से लिखतानी पतिया पहुंचला के
अइली फिरंगिया के गाँवे हो संघतिया

कहने का मतलब यह है कि हम अपने समय को रचते हैं, अपनी पीड़ा को गाते हैं। दर्द जब राग बन जाता है तो जीवन गीत बन जाता है और कुछ आसान हो जाता है। बात जब आत्मा से सलीके से निकलती है तो कला, साहित्य या सिनेमा केवल आईना नहीं होता, वह परिस्थितियों को ठीक करने के लिए हथौड़ा बन जाता है, हथियार बन जाता है।

भिखारी ठाकुर का पूरा साहित्य वैसा ही है। उनकी सच्ची श्रद्धांजलि यह होगी कि उनके साहित्य का, उनके नाटकों का, उनके गीतों का हिन्दी, अंग्रेजी और अन्य भारतीय व विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो और भिखारी ठाकुर सब तक पहुँचें। ... वर्ना वह सिर्फ एक नाम, एक नारा बनकर रह जायेगें, जबकि वह एक विचार हैं।

(लेखक मनोज भावुक भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक, सुप्रसिद्ध कवि व फिल्म–कला समीक्षक हैं।)

❐

पोखरा-02

एक अहसास है नेपाल का पोखरा

✍ डॉ. किशोर सिन्हा
वरिष्ठ नाटककार और मीडिया–विशेषज्ञ

पर्यटन की दृष्टि से तो पूरा नेपाल ही अद्भुत है, पर यहां का सबसे नयनाभिराम स्थान है पोखरा, जहां ढेर सारे दर्शनीय स्थल हैं जैसे फेवा झील, महेन्द्र गुफा, डेविस फॉल, गुप्तेश्वर महादेव गुफा, मनोकामना मंदिर, सारंगकोट सूर्योदय पॉइंट आदि।

पोखरा में गुप्तेश्वर महादेव 2950 मीटर लम्बी गुफा है, जो नेपाल की सबसे लंबी गुफा मानी जाती है जिसकी खोज सोलहवीं शताब्दी में हुई थी। इसी के सामने डेविस फॉल है, जिसे देवी का झरना कहा जाता है। इसके बारे में ये भी मान्यता है कि इस झरने का नाम डेविस नाम की एक स्विस महिला के नाम पर रखा गया, जिसके बारे में यह माना जाता है कि वह खेलते समय यहां पानी में डूब गई थी।

इसी प्रकार पोखरा के 'शांति स्तूप' के संबंध में भी हम आपको पिछले अंक में बता चुके हैं। अनाडु पहाडी पर 1100 मीटर की ऊंचाई पर स्थित निचिदात्सु फूजी ने 12 सितंबर, 1973 को बुद्ध के अवशेषों के साथ इस स्तूप की आधारशिला रखी थी जो दुनिया के 80 शांति स्तूपों में से एक है।

सैलानी की डायरी के पिछले अंक में हमने आपको पोखरा के इन पर्यटन स्थलों से परिचित कराया था। आज हम आपको पोखरा के कुछ और ऐसे ही दर्शनीय स्थलों की तरफ ले चलते हैं जहां पहुंचकर निश्चित ही आप एक अच्छे अहसास से गुजरेंगे।

इनमें एक महत्वपूर्ण स्थान है महेंद्र गुफा.....

महेंद्र गुफा पोखरा के उत्तर में स्थित, प्राकृतिक रूप से बने पर्यटन स्थलों में से एक है। यह एक तरह से अंधेरी गुफा है, जिसमें स्टेलेक्टाइट्स और स्टेलेग्माइट्स की चट्टानें हैं। यह लंबी गुफा है जो आगे जाकर बंद हो जाती है। हालांकि लोग बत्ताते हैं कि यह बंद नहीं है बल्कि इसके अंदर और भी कई गुफाएं हैं, लेकिन एक सीमा से आगे हम जा नहीं पाये। गुफा के अंदर रोशनी की व्यवस्था की गई है जिसमें स्टेलेग्माइट्स की चट्टानें ऐसे चमकती हैं मानो कोई फानुश जल रहा हो। यह गुफा चूना पत्थर से निर्मित है जो प्रकृति की एक दुर्लभ संरचना मानी जाती है। वर्षभर यहां पर्यटकों की भारी भीड जमा रहती है। इस गुफा के अंदर भगवान शिव की एक मूर्ति भी आपको दिखाई देगी, जो संभवतः बाद में वहां रखी गई होगी।

महेंद्र गुफा के बाद हम पहुंचे सारंग कोट.....

यह नेपाल के कास्की जिले में स्थित्त है। यह पोखरा के पश्चिमी किनारे पर 1600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित एक ऐसा पॉइंट है, जहां से धौलागिरी और अन्नपूर्णा के मनोरम हिमालयी दृश्य देखने के लिए वर्षभर पर्यटक यहां आते रहते हैं... खासतौर से सूर्योदय और सूर्यास्त की किरणें जब पर्वत के शिखरों पर पड़कर एक स्वर्णिम एहसास दिलाती हैं तो उसे देखने के लिए भारी संख्या में यहां भीड़ लगती है। इस शिखर से पोखरा शहर का भी एक विस्तृत दृश्य दिखाई देता है फेवा झील से लेकर सुदूर उत्तर से दक्षिण तक। यहां एक व्यूटावर भी बना हुआ है जिसके ऊपर सीढियों से जाया जा सकता है।

पोखरा का एक और दर्शनीय स्थल है पुमदिकोट महादेव मंदिर

समुद्र तल से 1500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह मंदिर नेपाल में

कैलाश नाथ महादेव मंदिर के बाद शिव की दूसरी सबसे ऊंची मूर्ति है। यह गंडकी प्रांत के कास्की जिले में स्थित है। इस प्रतिमा की ऊंचाई 51 फिट है। यह मूर्ति जिस शिला पर स्थित है, उसकी ऊंचाई 57 फिट है, जिससे इसकी पूरी संरचना 108 फीट ऊंची हो जाती है। मान्यता है कि भगवान शिव ने भस्मासुर से बचने के लिए अपने परिवार के साथ इसी जगह पर शरण ली थी। पौराणिक मान्यता यह भी है कि सिंदूर नाम के एक दैत्य ने माता पार्वती का हरण कर लिया था और इसी स्थान पर सिंदूर राक्षस और गणेश जी के बीच युद्ध हुआ था जिसमें सिंदूर का वध हुआ और उसके खून से भगवान शिव का अभिषेक किया गया था। कहा जाता है कि इसके बाद से ही भगवान शिव को सिंदूर चढ़ाने की परंपरा शुरू हुई। महाशिवरात्रि पर यहां भव्य मेला लगता है और लाखों पर्यटक इस मेले का हिस्सा बनते हैं। वर्तमान समय में प्रतिमा और उसके आसपास कुछ काम चल रहा है, जिसमें एक स्मारक पार्क के निर्माण की योजना है ताकि इस स्थान को धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में बढ़ावा मिल सके। यहां जाने के लिए सडक की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। पार्किंग भी बहुत सीमित और अव्यवस्थित थी और यहां के पथरीले रास्ते पर काफी चढाई करनी पड़ती है।

पोखरा में यहां का विंध्यवासिनी मंदिर सबसे पुराने मंदिरों में से एक है। यह मंदिर देवी काली के अवतार को समर्पित है, जिन्हें पोखरा शहर का रक्षक माना जाता है। परिसर में मां सरस्वती, हनुमान जी, शंकर जी और भगवान गणेश को समर्पित कई छोटे–छोटे मंदिर हैं। किंवदंतियों के अनुसार पोखरा का विंध्यवासिनी मंदिर सीधे तौर पर देखा जाए तो भारत के मिर्जापुर के विंध्याचल मंदिर से संबंधित है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि यह मंदिर भारत से ही लाकर यहां स्थापित किया गया था। विंध्यवासिनी मंदिर की वास्तुकला पैगोडा शैली की है जिसका रंग सफेद है। यहां बैठकर बहुत ही शांति का एहसास होता है।

नेपाल का मनोकामना मंदिर भी प्रसिद्ध और लोकप्रिय मंदिरों में से एक है जो गोरख गांव में स्थित है। इसकी वास्तुकला भी नेपाली पैगोडा शैली की है। इसमें चार शिखर हैं जो देश के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक इतिहास के प्रतीक हैं। 17वीं सदी का यह मंदिर माता पार्वती के एक अवतार देवी भगवती को समर्पित है। यह माना जाता है कि यहां आकर भक्तों की सारी इच्छाएं पूरी होती हैं। इस मंदिर तक पहुंचने का सबसे आसान तरीका केबल कार है। यह 10 मिनट की यात्रा त्रिशूली नदी के नयनाभिराम दृश्यों को देखते हुए लगभग 3 किलोमीटर की दूरी तय करती है।

इसके अलावा पोखरा को फेवा झील के कारण भी जाना जाता है। यह नेपाल में रारा झील के बाद गंडकी प्रांत की मीठे पानी की सबसे बड़ी झील है। फेवा झील 742 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और लगभग 5.7 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र को कवर करती है। इस झील की औसत गहराई लगभग 28 फीट और अधिकतम गहराई 79 फीट है। अगर आकाश साफ हो तो इस झील में अन्नपूर्णा और धौलागिरी पर्वतमाला सहित अन्य पर्वत की चोटियों के प्रतिबिंब भी दिखाई देते हैं। माना जाता है कि फेवा झील का निर्माण लगभग 13000 ईसापूर्व में हुआ था। झील का उत्तरी किनारा एक पर्यटक जिले के रूप में विकसित हुआ है जिसे आमतौर पर लेक साइड कहा जाता है। यहां पर्यटकों के लिए होटल, रेस्टोरेंट और बार हैं। हम पूरे पोखरा का भ्रमण कर जब फेवा झील के पास पहुंचे तो शाम हो रही थी और वहां संध्या आरती की तैयारी चल रही थी। आयोजक अपनी उदघोषणा में लोगों से इस आरती में भाग लेने की अपील कर रहे थे। कुछ परिवार और पर्यटक अभी भी नौकायन का आनंद लेने झील की तरह बढ़ रहे थे तो कुछ झील का आनंद उठाकर वापस किनारे की तरफ लौट रहे थे। डूबता सूरज झील के जल में प्रतिबिंबित हो रहा था। शाम की स्याही धीरे–धीरे झील को अपने आगोश में ले रही थी और दिन–भर के इस अद्भुत आनंद को लेकर मैं भी अपने होटल लौट रहा था।

देखा जाए तो पूरा पोखरा ही पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित है जहां की सुबह मनमोहक और शामें रंगीन होती हैं। इसीलिए पर्यटक नेपाल आने के बाद पोखरा जाना नहीं भूलते।

मैं काठमांडू से पोखरा तक बस की लंबी, 10 घंटे की थकाऊ यात्रा करके पहुंचा था। अब फिर से उस यात्रा को दुहराने की कोई ख्वाहिश नहीं थी। इसलिए मैंने पोखरा से काठमांडू तक की हवाई उड़ान का सहारा लिया और मात्र 30 मिनट में मैं काठमांडू की धरती पर था। बावजूद इसके अपने एक दिन के पोखरा–भ्रमण के हैंगओवर से मैं मुक्त नहीं हो पाया था।

❐

युवाओं के लिए कैसा होगा वर्ष 2025 ?

✍ राकेश सिंह 'सोनू'

मेष : इस राशि के अधिकतर युवाओं का सोचा हुआ काम सफल नहीं हो पाएगा। सोचेंगे पापा से बाइक और स्कूटी खरीदें पर साइकिल और ऑटोरिक्शा की सवारी से संतोष करना पड़ेगा। पॉकेट मनी में भी कटौती होने के आसार हैं।

वृष : इस साल आपकी बेवकूफियां हद कर देंगी और याददाश्त में भी थोड़ी गिरावट आ सकती है। इस राशि के लड़के अपनी गर्लफ्रेंड के भाई के सामने ही उसकी तारीफ कर पिटाई खा सकते हैं। इस राशि की लड़कियां भी अपने बॉयफ्रेंड के मम्मी डैडी से बकझक कर अपने अरमानों का गला घोंट सकती हैं।

मिथुन : इस साल आपको अचानक सफलता मिलेगी। बहन जी टाइप लड़कियां अगर टाइट जींस पहनना शुरू करें तो उनके आसपास भी रईस घरों के मुर्गे जरूर फुदकेंगे। लल्लू टाइप लड़कों को भी इस साल डेट पर जानेवाली हसीन पार्टनर मिल जाएगी।

कर्क: शुक्र की दृष्टि अच्छी रहेगी। स्वास्थ्य में कमाल का सुधार आएगा। पार्टियों में खाते ही लग जानेवाली दस्त की समस्या से इस साल निजात मिलेगी। कोर्स की पढ़ाई भले याद ना रहती हो पर शेरो शायरी आपके दिमाग के हार्ड डिस्क में जरूर सेव रहेगी।

सिंह: आपका सूर्य प्रबल होने की वजह से इस साल आपका क्रोध और बढ़ेगा। इस राशि के लड़के आए दिन रास्ते में अजनबियों से उलझ कर दो चार को जरूर ठोकेंगे। लड़कियां ऐसे ही लड़कों से दोस्ती करेंगीं ताकि उनसे छेड़खानी करनेवाले शख्स को पिटवा सके।

कन्या: चंद्र ग्रह के उग्र होने की वजह से कन्या राशि के गांधी टाइप लड़के इस साल रोमांटिक हो सकते हैं। जो समय वह किताबों को चाटने में जाया करते थे उसका सदुपयोग रेस्टोरेंट और पार्क जाकर कर सकेंगे। शांत सुशील दिखनेवाली लड़कियां भी मुगल–ए– आजम की स्थिति पैदा कर सकती हैं।

तुला: यह वर्ष आपके लिए संभावनाओं के नए द्वार खोलेगा। बिगड़ा हुआ काम बनेगा। मन की मुरादें पूरी होंगी। अतः जिसके साथ भी डेटिंग करनी हो कर डालें। शुक्र की कृपा से आप लड़कियों के बीच आकर्षण का केंद्र बने रहेंगे। शादीशुदा हैं तो सावधान ! आपकी पत्नी किसी और के घर में ज्यादा रुचि ले सकती है।

वृश्चिक: इस साल मंगल उच्च कोटि में रहने से आपकी हर मनमानी चलेगी। लड़के अय्याशी करने के लिए किडनैपिंग का पेशा अपना सकते हैं। लड़कियां भी मुफ्त की मौज मस्ती के लिए प्रेमी की हर शर्त मान सकती हैं। लव मैरिज के चांसेस बढ़ेंगे और घर से भागने वाले युवाओं की सुरक्षा का प्रबंध केंद्र सरकार को करना पड़ सकता है।

धनु: आपकी राशि में राहु के नीचे होने की वजह से इस साल रिश्तों में खटास आ सकती है। कोई अपना ही घर में डाका डालेगा। कुंवारे लड़कों पर भैया की शादीशुदा साली डोरा डाल सकती है तो नादान लड़कियों को दूर के फूफा,मौसा साथ भगा ले जा सकते हैं।

मकर: केतु की कुदृष्टि की वजह से इस साल आपकी फ्रेंडशिप कंजूस लोगों से होने के योग हैं। इस राशि के लड़कों के पैसों पर साल भर गुलछर्रे उड़ानेवाली शातिर लड़कियां अपनी शादी में भी उन्हें शरीक नहीं करेंगी। अपने कंजूस बॉयफ्रेंड की वजह से इस राशि की लड़कियों के वजन में 2 – 4 किलो गिरावट आ सकती है।

कुंभ: इस राशि के युवाओं का अपने हमउम्र भाई बहनों से नोंक झोंक होता रहेगा। इस राशि के भाई जब अपनी बहन को बॉयफ्रेंड के साथ रंगे हाथ पकड़ेंगे तब उसे ब्लैकमेल कर उससे अपनी नजरबंद प्रेमिका के घर कॉल लगवाएंगे। इस राशि की बहनें भी जब अपने भाई की आंख मिचौली पकड़ेंगी तो उसके एवज में 1000–500 का कमीशन जरूर खाएंगी।

मीन: आपकी राशि पर शनि की साढ़े साती चल रही है। काम की उलझने बढ़ सकती हैं। आप जब भी अपनी गर्लफ्रेंड या बॉयफ्रेंड से मिलने जाएं काला वस्त्र अवश्य धारण कर लें वरना आई लव यू कहने की संभावना जाती रहेगी।

(यह राशिफल शुद्ध मनोरंजन के लिए है।) ❐

शिक्षा से वंचित शरणार्थी बच्चे

✍ विजय गर्ग
शैक्षिक स्तंभकार, मलोट, पंजाब

हाल में जारी इंटरनेशनल रेस्क्यू कमेटी की एक रपट के मुताबिक फरवरी, 2022 से यूक्रेन – रूस युद्ध शुरू होने के बाद से यूक्रेन के लगभग दो–तिहाई बच्चों को अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा है। एक अनुमान के अनुसार, चालीस लाख बच्चों को मानवीय सहायता की आवश्यकता है। तेरह सौ से अधिक स्कूल नष्ट हो गए हैं। इसी तरह के हालात रूस के कुछ क्षेत्रों में भी दिखाई देते हैं, जो इस बात की तस्दीक करते हैं कि युद्ध के बाद दोनों देशों में बचपन संकट में है। एक अनुमान के अनुसार, संकटों से प्रभावित दुनिया में करीब 22 करोड़ 40 लाख बच्चों को शैक्षिक सहायता की आवश्यकता है। जो लोग सीखना जारी रख सकते हैं, उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। दुनिया के आधे से अधिक शरणार्थी बच्चे 18 साल के हैं और बहुत मुश्किल हालात में जी रहे हैं। इनमें से अधिकतर के घर लौटने की उम्मीद कम है। कई संकटों से जूझ रही दुनिया में शरणार्थी बच्चों की शिक्षा का मुद्दा बहुत बड़ा है।

इसी तरह, 2023 में जारी एक वैश्विक अध्ययन में पाया गया कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित बच्चों की संख्या बढ़ रही है। अध्ययन यह भी बताता है कि समस्या केवल पहुंच की नहीं, बल्कि गुणवत्ता की भी है। आधे से अधिक प्रभावित बच्चे शिक्षा में न्यूनतम दक्षता भी हासिल नहीं कर पा रहे हैं। इस अध्ययन में सभी के लिए समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात कही गई है। अध्ययन में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि संकट में बेहतर सीखने के परिणामों को सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा महत्त्वपूर्ण है।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी एजेंसी (यूएनएचसीआर) की एक रपट में कहा गया है कि स्कूल जाने योग्य करीब सत्तर लाख शरणार्थी बच्चों में से तीस लाख सत्तर हजार बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं। स्टेपिंग अपः रिफ्यूजी एजुकेशन इन क्राइसिस नामक रपट से पता चलता है कि जैसे–जैसे शरणार्थी बच्चे बड़े होते हैं, उन्हें शिक्षा तक पहुंचने से रोकने वाली बाधाओं को दूर करना कठिन होता जाता है। केवल 63 प्रतिशत शरणार्थी बच्चे प्राथमिक विद्यालय जाते हैं। यहां शरणार्थियों को दूसरा अवसर मिलता है। शरणार्थियों को उनके भविष्य में आवश्यक कौशल और ज्ञान विकसित करने का अवसर न देकर उन्हें विफल किया जा रहा है। भले शरणार्थी किशोर बाधाएं पार करके माध्यमिक विद्यालय तक पहुंच जाते हैं, लेकिन केवल तीन फीसद को किसी प्रकार की उच्च शिक्षा मिल पाती है। यह वैश्विक आंकड़ा 37 फीसद के मुकाबले बहुत कम है। दुनिया भर के शरणार्थी बच्चों की शिक्षा का मुद्दा चिंता का विषय है।

वहीं संयुक्त राष्ट्र की एक नई रपट में चौंकाने वाले आंकड़े दर्शाते हैं कि संकट प्रभावित स्कूली उम्र के ऐसे बच्चों की संख्या बढ़ रही है, जिन्हें

शैक्षणिक सहयोग की आवश्यकता है। इस रपट के अनुसार, जरूरतमंद बच्चों की संख्या वर्ष 2016 में साढ़े सात करोड़ से बढ़ कर अब 22 करोड़ 20 लाख तक पहुंच गई है। रपट के मुताबिक, आपात स्थिति और लंबे समय से चले आ रहे संकट प्रभावित इलाकों में शिक्षा के लिए इन 22 करोड़ से अधिक लड़के–लड़कियों में सात करोड़ 82 लाख बच्चे विद्यालय से बाहर हैं। लगभग 12 करोड़ बच्चे विद्यालय में उपस्थित होने पर भी पढ़ने में न्यूनतम कौशल हासिल नहीं कर पा रहे हैं। संकटों से जूझ रहे हर दस में से केवल एक बच्चा प्राथमिक या माध्यमिक स्तर पर वास्तव में निपुणता मानकों पर खरा उतर पा रहा है।

रपट अनुसार, स्कूल से वंचित होने वाले 84 फीसद बच्चे लंबे समय से जारी संकट प्रभावित इलाकों में रह रहे हैं। इनमें अफगानिस्तान, काँगो, इथियोपिया, माली, नाइजीरिया, पाकिस्तान, सोमालिया, दक्षिण सूडान और यमन समेत अन्य देश हैं। संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि जरूरतें कभी भी इतनी बड़ी और इतनी तात्कालिक नहीं रही हैं। कोविड कारण निर्धनतम परिवारों में शिक्षा का नुकसान अधिक हुआ है। साथ ही वे समुदाय भी प्रभावित हुए हैं, जो पहले से ही शिक्षा में पिछड़ रहे थे। इन दोनों श्रेणियों में आमतौर पर संकट प्रभावित इलाकों में रहने वाले बच्चे आते हैं। संकट प्रभावित बच्चों के बुनियादी अधिकारों की रक्षा हर हाल में करनी होगी। इनमें न्यायोचित, समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अधिकार शामिल है।

एजुकेशन कैन नाट वेट (ईसीडब्लू) की रपट कहती है कि संकटग्रस्त देशों में केवल ढाई करोड़ बच्चे स्कूल जा रहे हैं और न्यूनतम् दक्षता

स्तर प्राप्त कर रहे हैं। इन देशों में जबरन विस्थापित आबादी में स्कूल न जाने वाले बच्चों की दर चिंताजनक रूप से उच्च बनी हुई हैं, जो स्कूली आयु वर्ग के बच्चों के लिए लगभग 58 फीसद है। लगभग डेढ़ करोड़ बच्चों को कार्यात्मक कठिनाइयां हैं और वे स्कूल नहीं जा रहे हैं। इनमें से लगभग एक करोड़ दस लाख तो उच्च तीव्रता वाले संकटों में केंद्रित हैं। इन क्षेत्रों माध्यमिक शिक्षा तक तक पहुंच अपर्याप्त है, निम्न माध्यमिक विद्यालय आयु वर्ग के लगभग एक तिहाई बच्चे स्कूल से बाहर हैं। उच्च माध्यमिक विद्यालय आयु वर्ग के लगभग आधे बच्चे शिक्षा तक पहुंच पाने में असमर्थ हैं। एक अनुमान के अनुसार, तीन वर्ष की आयु लेकर उच्चतर माध्यमिक शिक्षा पूरी करने की अपेक्षित अवधि तक कम से कम ढाई करोड़ संकटग्रस्त बच्चे अंतर–एजेंसी योजनाओं से बाहर रहे हैं, जो कुल वैश्विक संख्या का लगभग 9.4 फीसद है। उप– सहारा अफ्रीका के संकटग्रस्त देशों के तुलनात्मक विश्लेषण से पता चलता है कि सात से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए सीखने की गति बार–बार होने वाली प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित देशों की तुलना में औसतन लगभग छह गुना धीमी हो सकती है।

असल में, संकट के समय बच्चों की शिक्षा को सबसे ज्यादा प्रभावित किया जाता है। सबसे आखिर में बहाल किया जाता है। ऐसे समय में बच्चों की शिक्षा और उनका कल्याण बेहद जरूरी है। प्रभावित बच्चों को शिक्षा सहायता देनी होगी। शिक्षा प्रणालियों को ज्यादा संसाधनों की जरूरत होती है, लेकिन उन्हें मानवीय सहायता का तीन फीसद से भी कम हिस्सा मिलता है। इसे बढ़ाना होगा। शिक्षा प्रणालियों में शिक्षण और कर्मचारियों की कमी को पूरा करना होगा। संकट के समय बच्चों को स्कूल से सुरक्षा मिलती है उन्हें जीवनरक्षक भोजन, पानी, स्वास्थ्य देखभाल और स्वच्छता की सुविधा भी मिलती है। इस दौरान बच्चों को मनोवैज्ञानिक सहायता भी देनी होगी। हमें इन पहलुओं पर गंभीरता से काम करना होगा। किसी भी बच्चे का बचपन संकट में आने पर उसे बाहर निकालना ही होगा, तभी बचपन बचेगा। ❐

शू लॉन्ड्री की शुरुआत करने के पहले ही घरवाले खिलाफ हो गए थें : शाजिया कैसर

भागलपुर की शाजिया कैसर बिहार के पहले शू लॉन्ड्री 'रिवाइवल शू लॉन्ड्री' की मालकिन हैं। पेशे से फिजियोथेरेपिस्ट शाजिया इससे पहले डब्लू.एच.ओ. एवं यूनिसेफ में भी काम कर चुकी हैं। तब अपनी डॉक्टरी प्रैक्टिस के दौरान उन्होंने एक पत्रिका में 'शू लॉन्ड्री' पर एक आर्टिकल पढ़ा और तभी से वो इतना प्रभावित हुईं कि बिहार में इस बिजनेस को स्टार्ट करने का मन बनाया। जॉब के साथ साथ रिसर्च वर्क जारी रहा और उसी सिलसिले में वो भूटान और ऑल ओवर इंडिया के पूणा, मुंबई, चेन्नई इत्यादि ब्रांच में जाकर ट्रेनिंग ले आयीं। शू लॉन्ड्री की शुरुआत करने से पहले ही घर एवं ससुराल के लोग खिलाफ हो गएँ। ताने मारने लगें कि ये मोची वाला काम छोड़कर कोई और काम शुरू करो। लेकिन शाजिया को इस नए बिजनेस और अपने आप पर पूरा विश्वास था। फिर पति का साथ मिलते ही दिसंबर 2012 में पटना के अल्पना मार्केट(न्यू पाटलिपुत्रा कॉलोनी) में 3 स्टाफ के साथ बिहार की पहली शू लॉन्ड्री की नींव रख डाली। (अब पटना के प. बोरिंग केनाल रोड, आदंदपुरी में) जहाँ क्लीनींग, पॉलिशिंग,शोल रिप्लेसिंग, पेस्टिंग, नेट चेंजिंग का काम होता है। शाजिया की शू लॉन्ड्री में देसी से लेकर विदेशी और आम से लेकर खास तबकों के जूते भी आते हैं।

शाजिया बिहार में अपनी कम्पनी के ब्रांच खोलने की तयारी में हैं। वे अन्य राज्यों उड़ीसा, झाड़खंड, छत्तीसगढ़, रोहतक आदि में शू लॉन्ड्री खोलनेवालों को ट्रेनिंग भी दे चुकी हैं। 2013 में वूमेंस डे पर इनोवेशन फिल्ड में साल की चार महिलाओं में से एक इनका भी चयन हुआ था। इनके प्रयासों के लिए इन्हें बिहार इंडस्ट्रियल एसोसिएशन और कई अन्य संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। इण्डिया इनिशिएटिव के तहत देशभर में 6 स्टार्टअप्स की सक्सेज स्टोरी प्रकाशित की गयी। इन 6 चयनित स्टार्टअप्स में दो पटना के हैं जिनमे शाजिया कैसर का नाम भी है। अंततः अपनों द्वारा ही रोक टोक के बावजूद शाजिया ने साबित कर दिखाया की जहाँ चाह है वहां राह है। ❐

लघुकथा

पेपर लीक

✍ अम्बिका कुमारी कुशवाहा
पटना (बिहार)

दो दोस्त पंकज और सरोज पटना शहर में किराए के मकान में रहकर पढ़ाई करते थे। सरोज मेडिकल प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी करता है।

आज सुबह से ही सरोज लगातार मोबाइल पर न्यूज देखे जा रहा है उसके चेहरे पर टेंशन की बूंदे साफ दिख रही है। उसके रूममेट पंकज को सरोज की बढ़ती चिंता देखी नही जा रही। पंकज सरोज से बोला – चल भाई पटना सेन्टर मॉल से घूम आते है। पंकज किसी भी बहाने से सरोज को बाहर ले जाना चाहता था ताकि उसका मन थोड़ा शांत हो जाये।

सरोज पंकज की ओर देखते हुए बोला– पंकज, मुझे कही नही जाना और कोई काम करने का मन नहीं मेरा। पंकज कई सालों से मैं लाखों रुपये लगाकर प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी कर रहा हूँ। मम्मी पापा बहुत मेहनत कर मेरी पढ़ाई के लिए पैसे भेजते हैं। हर साल हजारों रुपये का फॉर्म, महंगी कोचिंग की फीस, फिर जरूरत की चीजों का खर्च अलग। इतने पैसे खर्च के साथ साथ रात दिन मेहनत करके पढ़ाई करना। फिर एग्जाम में हर बार असफल हो लोगों के बीच उपहास बनना।

पंकज, सरोज को समझाते हुए बोला– भाई.. मैं जानता हूँ पर क्या कर सकते हैं। सबसे बड़ी समस्या स्टूडेन्ट ज्यादा और सीटे कम होती है।

सरोज, पंकज की बात काटते हुए बोला – पंकज.. मैं खुद पर शर्मिंदा हूँ, हर बार अपने मम्मी पापा को शर्मिन्दा करता हूँ, इतनी मेहनत के बाद लाखों स्टूडेंट पर हजार सीटें आती हैं, हर साल स्टूडेंट अपनी किस्मत लेकर जिद्द करते हैं। फिर होती हैं परीक्षाओं में धांधली और पेपर लीक जैसी करतुतें जो हमे पूरी तरह तोड़ देती हैं। पंकज अब मुझसे नही होती तैयारी, अब मुझसे नही मांगे जाते घर से खर्च के लिए रुपये।

पंकज बोला – तब सरोज क्या करना हैं अब तुम्हें?

सरोज बोला – पंकज मैं नही जानता कि क्या करूँगा, परन्तु अब मैं घर से खर्च नही मांग सकता। और अपनी हार का मुंह लेकर घर वापस भी नही जाऊंगा।

❐

वर्ष 2025 गणितीय दृष्टिकोण से एक अजूबा एवं रोचक वर्ष

✍ उमेश उपाध्याय
आध्यात्मिक एवं ज्योतिष विशेषज्ञ
संपर्क: 9709378488

नूतन वर्ष 2025 के आगमन पर सभी को नए वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

वर्ष 2025 गणितीय दृष्टिकोण से एक अजूबा एवं रोचक वर्ष है।

2025 स्वयं में एक वर्ग है।

(45)'2=2025

2025 दो वर्गों का गुणनफल है।

(9)'2 (5)'2=2025

2025 तीन वर्गों का जोड़ है।

(40)'2(20)'2(5)'2=2025

2025 1 से 9 संख्याओं के घन का भी जोड़ है।

(1)'3(2)'3(3)'3(4)'3(5)'3(6)'3(7)'3(8)'3 (9)'3=2025

2025 के अंकों का अगर योग किया जाए तो इसका योग 9 होता है ।

2025=9

अंक ज्योतिष के अनुसार 9 अंक मंगल का अधिष्ठाता है। इस प्रकार अंक ज्योतिष के अनुसार यह वर्ष मंगल से प्रभावित वर्ष होगा।

मंगल को ज्योतिष में सेनापति कहा जाता है। अंक ज्योतिष के अनुसार भाग्यांक 9 वालों के लिए यह वर्ष महत्वपूर्ण होगा।

अब हम ग्रहों के गोचर की बात करें तो 2025 में चार महत्वपूर्ण ग्रह जो लंबे समय तक एक राशि में रहते हैं का राशि परिवर्तन हो रहा है जो इस प्रकार है। शनि, कुंभ राशि से बदलकर मीन राशि में 29 मार्च को चले जाएंगे जिसके फलस्वरूप कर्क एवं वृश्चिक राशि वालों की ढैया समाप्त होगी तथा मकर राशि वाले की साढेसाती समाप्त होगी। मेष राशि वाले का साढेसाती प्रारंभ हो जाएगा साथ ही कुंभ एवं मीन राशि वालो की साढेसाती चलती रहेगी।

मई माह में बृहस्पति एवं राहु तथा केतु का भी राशि परिवर्तन होगा। बृहस्पति वृष राशि से बदलकर मिथुन राशि में चले जाएंगे तथा राहु मीन राशि से कुंभ राशि में चले आएंगे। केतु का गोचर सिंह राशि में हो जाएगा। इस परिवर्तन से इसका असर सभी राशियों पर अलग–अलग पड़ेगा।

कर्क एवं वृश्चिक लग्न एवं राशि वालों का इस वर्ष ढैया समाप्त होने के कारण कष्ट से राहत मिलेगा।

वृष एवं तुला राशि वालों के लिए यह वर्ष महत्वपूर्ण है।

वृष राशि से शनि के एकादश स्थान में गोचर होने से धन की प्राप्ति ,रोग से मुक्ति, किसी उच्च अधिकार एवं संतान आदि से सुख होगा।

तुला राशि से षष्ठ स्थान में शनि के गोचर होने से धन की प्राप्ति एवं सुख की वृद्धि होगी। कुटुंब से सुख प्राप्त होगा। शत्रु पर विजय एवं मकान बनाने का सौभाग्य प्राप्त होगा। ❐

अपने 'सेल्फ' को कैसे बेहतर करें ?

✍ डॉ. कुमकुम वेदसेन
मनोविश्लेषक, नवी मुंबई
संपर्कः 8355897893
ईमेल : k.vedasen@gmail.com

नए वर्ष की शुरुआत नए संकल्प, नई सोच, नए विचार के साथ करें। यहां हम सेल्फ व्यक्तित्व के विषय में चर्चा कर रहे हैं। हर इंसान, हर व्यक्ति में सेल्फ कई प्रकार के होते हैं। सेल्फ एक ऐसा शब्द है जिससे यह समझ में आता है कि मैं क्या हूं या हम क्या हैं..? हमारे आसपास की दुनिया क्या है..? हम में क्या–क्या खूबियां हैं और क्या–क्या कमियां हैं?

एक सेल्फ जिससे मेरा अपना परिचय मिलता है। पारिवारिक परिचय के रूप में, बायोडाटा के रूप में हम प्रस्तुत करते हैं। यह तो बहुत छोटा सा सेल्फ का एक हिस्सा है जो बाहरी तौर पर दिखता है लोगों को, लेकिन इसके अलावा भी हमारे पास कई प्रकार के सेल्फ हैं जो कुछ छुपे हुए हैं और कुछ निर्णय में सामने नहीं आए हैं। वैसे सेल्फ कि हम चर्चा करते हैं, इंसान एक इमोशनल सेल्फ लेकर के चलता है। इसी सेल्फ को ऊपर उठाने के क्रम में हम बहुत सारी गलतियां कर डालते हैं। जब यह समझ में आता है कि यह गलतियां हैं तब तक बहुत देर हो चुकी रहती है। एक उदाहरण द्वारा समझिए – मान लीजिए कि आपके घर में दो पीढ़ी के लोग रहते हैं, दोनों के विचार बिल्कुल अलग–अलग हैं। दोनों पीढ़ी के पास अपना एक सेल्फ है। एक के पास अनुभव रूपी सेल्फ है और दूसरे के पास उभरता हुआ सेल्फ, अब दोनों के बीच में जब तकरार होती है दोनों में से कोई मानने को तैयार नहीं रहते कि हम सही हैं या वह सही है। फलस्वरुप क्या होता है...कहीं ना कहीं जिंदगी कांटों की तरह उलझ जाती है। आजकल आप रियल में देख रहे हैं। रील के माध्यम से भी कई प्रकार के सेल्फ उत्पन्न हो रहे हैं। जो जैसी रही भावना वैसी प्रभु मूरत देखी। भावना आपकी जैसी होगी उसी के आधार पर आपके व्यवहार भी होंगे। भावनाओं का जो बनना और बिगड़ना है या भावुक होना है वह मुख्यत इमोशन का एक छोटा सा उदाहरण है। सास बहू की कहानी में सास हमेशा इस मानसिकता में रहती है कि मेरी उम्र ज्यादा है, अनुभव है, मैंने दुनिया देखी है और उसी के अनुसार अपनी घर की बहू को दिशा निर्देश करती रहती है। ठीक उसी जगह पर उसके घर की बहू को यह मानसिकता रहती है कि हम आज के जमाने की पीढ़ी हैं, हम पुराने जमाने से बेहतर हैं । मुझे ना समाज की परवाह है ना परिवार की परिवाह है। हम, मैं, मेरा अस्तित्व को साबित करने में सामाजिक मर्यादा को भूल जाते हैं।

अपनी हिम्मत से व्यक्तित्व के छिपे गुणो को निकालना है। सकारात्मक सोच से एक ऐसा संसार बनाएं जो सामाजिक हो और पारिवारिक मर्यादा में रहे, एक गुलदस्ता की तरह लगे।

अपने परिवार को बदलने के लिए प्रतिदिन पांच संकल्प लें। संकल्प की जादुई शक्ति कुछ दिनों में ही अपना कमाल दिखला सकती है यह अक्षरशः सत्य है।

अपने व्यक्तित्व में चार गुना को अवश्य जोड़े। पहले सुनने की आदत डालें। दूसरा, अपनों का ध्यान रखें। तीसरा, हमेशा मदद करने की सोचें और चौथा, किसी विषय या चीजों को आपस में अवश्य शेयर करें। इन बातों का ध्यान रखकर सेल्फ में, व्यवहार में, तरक्की कर सकते हैं, उन्नति की ओर आसानी से जा सकते हैं, यह जिंदगी की एक गहरी सच्चाई है। ❐

आदित्य चोपड़ा की यशराज फिल्म्स ने मर्दानी 3 की घोषणा की

मुंबई ब्यूरो, यशराज फिल्म्स की मर्दानी हिंदी सिनेमा की सबसे बड़ी एकल महिला–प्रधान फ्रैंचाइज है, जिसने पिछले 10 वर्षों में प्यार और प्रशंसा बटोरी है! ब्लॉकबस्टर फ्रैंचाइज को लोगों से एकमत प्यार मिला है और इसने सिने प्रेमियों के बीच एक पंथ का दर्जा हासिल कर लिया है।

मर्दानी 2 की रिलीज की सालगिरह पर, यशराज ने आधिकारिक तौर पर घोषणा की कि वह मर्दानी 3 बना रहा है जिसमें रानी मुखर्जी फिर से एक साहसी पुलिस शिवानी शिवाजी रॉय का किरदार निभा रही हैं। भारतीय सिनेमा की अब तक की सबसे बेहतरीन अभिनेत्रियों में से एक, रानी मुखर्जी, मर्दानी के साथ एकल लीड के रूप में ब्लॉकबस्टर फ्रैंचाइज बनाने वाली एकमात्र अभिनेत्री हैं।

रानी कहती हैं, "मुझे यह घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि हम अप्रैल 2025 में मर्दानी 3 की शूटिंग शुरू कर रहे हैं। पुलिस की वर्दी पहनना और ऐसा किरदार निभाना हमेशा खास होता है जिसने मुझे हमेशा प्यार दिया है। मुझे मर्दानी 3 में फिर से इस साहसी पुलिस अधिकारी का किरदार निभाने पर गर्व है। यह उन सभी गुमनाम, बहादुर, आत्म–बलिदान करने वाले पुलिस अधिकारियों के लिए एक श्रद्धांजलि है जो हमें सुरक्षित रखने के लिए हर दिन अथक परिश्रम करते हैं।"

रानी ने खुलासा किया कि मर्दानी 3 पिछली फिल्मों की तुलना में एड्रेनालाईन रश को कई पायदान ऊपर ले जाएगी।

वह कहती हैं, "जब हमने मर्दानी 3 बनाने का फैसला किया, तो हम

उम्मीद कर रहे थे कि हमें एक ऐसी स्क्रिप्ट मिले जो मर्दानी फ्रैंचाइज की फिल्म देखने के अनुभव को और बेहतर बनाए। मैं अपने हाथ में जो कुछ भी है, उसे लेकर बहुत उत्साहित हूं और मैं केवल यही उम्मीद कर रही हूं कि सिनेमाघरों में मर्दानी 3 देखने के बाद दर्शक भी ऐसा ही महसूस करें।"

रानी ने आगे कहा, "मर्दानी एक बेहद पसंद की जाने वाली फ्रैंचाइज है और लोगों की उम्मीदों पर खरा उतरना हमारी एक निश्चित जिम्मेदारी है। हम इस पर खरा उतरने की पूरी कोशिश करेंगे। मर्दानी 3 डार्क, घातक और क्रूर है। इसलिए, मैं अपनी फिल्म के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया जानने के लिए उत्सुक हूं। मुझे उम्मीद है कि वे इस फिल्म को भी उतना ही प्यार देंगे जितना उन्होंने हमेशा दिया है।"

मर्दानी 3 में आदित्य चोपड़ा निर्देशन और लेखन टीम से दो प्रतिभाओं को रचनात्मक रूप से सहयोग करने और फ्रैंचाइजी की विरासत को आगे बढ़ाने के लिए सशक्त बनाते हुए नजर आएंगे।

मर्दानी 3 की पटकथा द रेलवे मेन से मशहूर हुए आयुष गुप्ता ने लिखी है। द रेलवे मेन के साथ आयुष ने बतौर पटकथा और कहानीकार स्ट्रीमिंग पर शुरुआत की और इस सीरीज को वैश्विक स्तर पर सफलता मिली और यह भारत की अब तक की सर्वश्रेष्ठ सीरीज भी बन गई। उनकी दिल को छू लेने वाली और दमदार लेखनी की दुनिया भर में सराहना की गई।

मर्दानी 3 का निर्देशन अभिराज मीनावाला करेंगे, जिन्हें वाईआरएफ ने भी तैयार किया है। उनकी क्षमता को आदित्य चोपड़ा ने पहचाना जिन्होंने सबसे पहले उन्हें बैंड बाजा बारात, गुंडे, सुल्तान, जब तक है जान, टाइगर 3 जैसी फिल्मों में सहायता करने के लिए सशक्त बनाया। अभिराज वर्तमान में वॉर 2 के एसोसिएट डायरेक्टर हैं और अब कंपनी उन्हें ब्लॉकबस्टर मर्दानी फ्रैंचाइजी की बागडोर संभालने के लिए भरोसा दे रही है।

❐

भोजपुरी गायिका देवी के गांधी भजन ''रघुपति राघव'' के गायन पर विवाद

✍ निराला बिदेसिया

भोजपुरी गायिका देवी के गांधी जी के प्रिय भजन, रघुपति राघव के गायन पर कुछ लोगों के हूटिंग और विरोध से संबंधित खबर एक अखबार में छपी। सुबह से कुछ साथियों ने उसे शेयर किया। ऐसी घटना का विरोध स्वाभाविक है। होना ही चाहिए। उसी ज्ञान भवन में गांधी के संगीत पर लंबा बोलने का अनुभव रहा है। रामा शंकर सिंह सर के मार्दशन में आयोजन था। गांधी की 150 वीं जयंती वर्ष पर। उसकी याद अब तक मन में है। उस व्याख्यान को रमाशंकर सर ने बाद में छापा भी। फिर एक बार ज्ञान भवन में गांधी संगीत पर नैरेट करने का यादगार अनुभव रहा है। यह आयोजन भाई सोपान जोशी के मार्गदर्शन में हुआ था। बिहार के हर जिले के शिक्षक आए थे आयोजन में। उसके पहले उसी पटना के भारतीय नृत्य कला मंदिर में भाई सुशील कुमार के मार्गदर्शन में गांधी संगीत का आयोजन हुआ था। नैरेट करने का अवसर मिला था। गांधी संगीत पर दर्जन से ज्यादा जगहों पर या तो बोलने या संगीत के संग नैरेट करने का मौका मिला है। हर बार नायाब अनुभव रहा है। बोल लेने या नैरेट कर लेने के बाद मंच से उतरने पर अनेक लोग मिलने आते हैं। सबका प्रायः प्रश्न होता है, गांधी जी के संगीत वाल पक्ष तो जानते ही नहीं। अदभुत है।

यह प्रश्न गांधी के संगीत पक्ष को लेकर इसलिए रहता है, क्योंकि हम गांधी को संगीत के जरिए कम जानते हैं। अब यह तय है कि कल पटना के अखबारों में और खबरें छपेंगी कि मामले ने पकड़ा तूल। जिन बड़े लोगों ने विरोध किया है, विरोध का, उनकी बात छपेगी। सोशल मीडिया के पोस्ट भी अब खबर रूप में लगते हैं, लगेंगे। यह सब स्वाभाविक भी है। संभव है, रघुपति राघव का इतिहास बताया जाएगा। लक्ष्मणाचार्य जी का पूरा गीत छापा जाएगा कि यह पूरा गीत है रघुपति राघव,जो मूल रूप से लक्ष्मणाचार्य का है। फिर कब ईश्वर

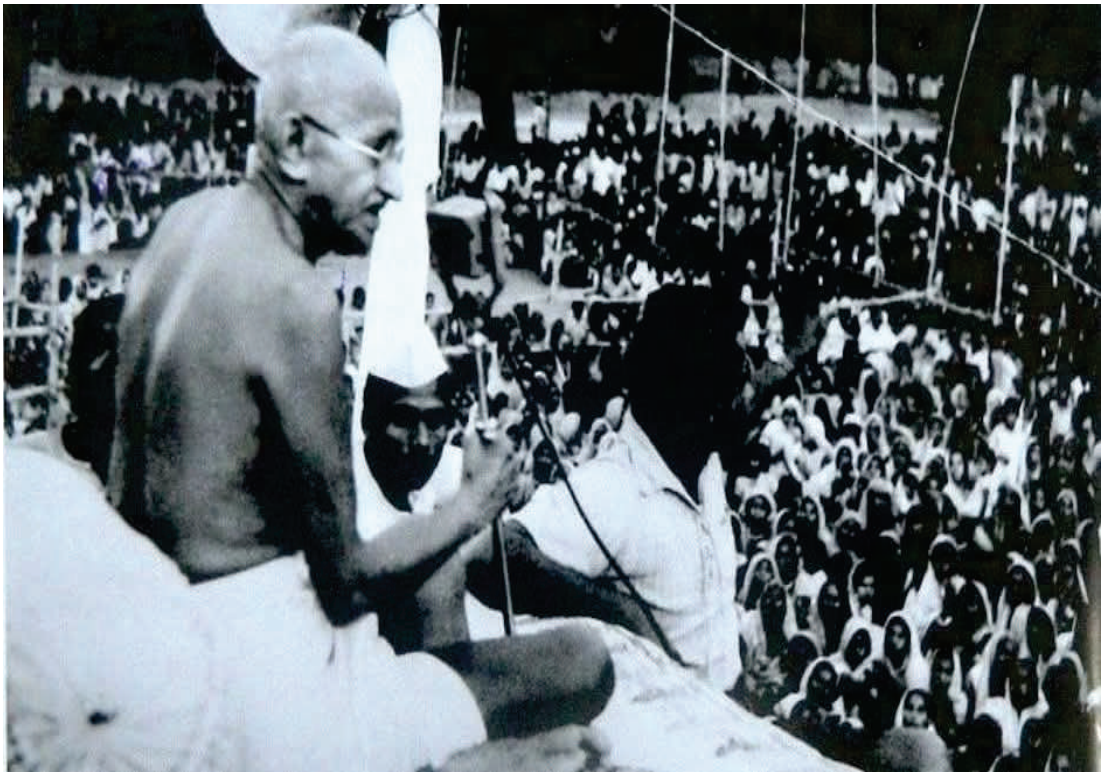

अल्ला जुड़ा यह भी बताया जाएगा। मनुबेन का प्रसंग भी शायद आयेगा कि कैसे ईश्वर अल्ला वाला यह अंतरा जुड़ा था। फिर बात शांत हो जाएगी। फिर अगले महीने की आखिरी तारीख को गांधी की बरसी आएगी। 30 जनवरी को। फिर अखबारों में गांधी छपेंगे। दो अक्टूबर और तीस जनवरी पर गांधी छपते हैं। दूसरे सभी नेताओं की तरह जयंती, पुण्यतिथि पर। जबकि गांधी के नाम पर वाद विवाद सालों भर चलता है। गांधी किसी भी दूसरे नेताओं की तरह सीमित नहीं है। भाजपा उन्हें नापसंद करती है। कांग्रेस ने उन्हें किनारे लगा दिया था। उनके खिलाफ अभियान चलाया था। कम्युनिस्टों ने गांधी को कभी पसंद नहीं किया। नई नवेली पार्टी ष्आपष को गांधी की तस्वीरों को सांकेतिक तौर पर अपनाना रिस्की लगा इसलिए उसने भगत सिंह और बाबा साहब की तस्वीरों को सेफली अपना लिया। गांधी सबके लिए खतरा रहे हैं। गांधी को मुसलमानों का एक वर्ग कभी पसंद नहीं किया, क्योंकि वे पक्के सनातनी थे। सनातनियों के एक वर्ग ने तो गांधी का विरोध किया ही हमेशा, और अब भी भेड़ की तरह झुंड में चलने के अभ्यस्त होकर करते ही हैं। तुर्रा और तर्क कि गांधी मुसलमानों के हितैषी थे। ऐसा अनेक पढ़े लिखे लोग भी कहते हैं। सच यह है कि गांधी किसी को कभी पसंद नहीं रहे। कुछ कांग्रेसियों और समाजवादियों के एक बड़े खेमे को छोड़कर। हां, गांधी संगीतकारों को हमेशा से पसंद रहें। दीवानगी रही गांधी के प्रति। गांव के लोकगायक से लेकर शास्त्रीय, सुगम, रॉक ,पॉप सबमें। तब बात यह है कि गांधी को लेकर जब इतनी द्वंद दुविधा है तो मीडिया में क्यों नहीं एक लंबे कैंपेन की तरह चलता नई पीढ़ी को गांधी के बारे में ले मैन की भाषा में बताने के लिए। एक एक पक्ष पर। एक एक बिंदु पर। गांधी पर हर साल किताबें लिखी जा रही हैं। बिक रही हैं। चर्चित हो रही हैं। जाहिर सी बात है लोगों में रुचि है गांधी के बारे अधिक से अधिक जानने के लिए। गांधी अनंत सागर की तरह हैं भी। इतना कुछ लिखे जाने के बाद भी उनके व्यक्तित्व कृतित्व का विराट आयाम और लिखने को प्रेरित करता है। राजनीति की बात से परे सिर्फ गांधी के संगीत पक्ष पर ही कायदे से क्रमवार बताया जाए तो गांधी दुनिया के एक अद्वितीय नायक दिखेंगे। दुनिया में इतना बड़ा कोई संगीत प्रेमी नायक नहीं दिखेगा। दुनिया के संगीत को प्रभावित करनेवाला ऐसा कोई दूसरा न हुआ। यह सब लगातार बताने से भेड़ चाल चलकर बात बात पर विरोध करनेवाले भी जानेंगे कि गांधी ने रोजाना के भजन के लिए नरसी मेहता के वैष्णव जन को ही क्यों चुना था। तुलसीदास के जय राम रमा को क्यों शामिल किया था। सुब्बुलक्ष्मी को क्यों कहा था पत्र लिखकर कि मीरा के भजन, हरि तुम हरो जन की पीर गाओ। तुलसी, मीरा, सूरदास के भजनों को कितना प्रेम किया। उनके लिए भजन या संगीत का मतलब क्या होता था। तब गांधी का विरोध करनेवाले जानेंगे कि गांधी की तरह सनातनी होना अब किसी के बस की बात नहीं, जो बिना भजन प्रार्थना एक दिन भी नहीं रह सकते थे। विपरीत से विपरीत हालात में भी। ❐

खुद कोरोना पॉजिटिव रहते हुए कई कोविड पेशेंट्स के काम आई ये डॉक्टर : डॉ. आकांक्षा अभिषेक, चीफ डेंटल कंसल्टेंट

पटना की चीफ डेंटल कंसल्टेंट डॉ. आकांक्षा अभिषेक जो 'द टूथ डॉक्टर्स' डेंटल क्लिनिक की फाउंडर हैं, कोरोना काल में खुद संक्रमित हो गयी थीं बावजूद ये ना सिर्फ कोरोना से जिंदगी की जंग में खुद विजयी हुईं बल्कि कई सारे कोविड पेशेंट्स की जिंदगी बचाने के काम आईं।

कोरोना की दूसरी लहर के तेज होते ही 16 अप्रैल को इन्हें अपना क्लिनिक बंद करना पड़ा। बंद होने के तीन–चार दिन बाद ही इनके सहयोगी डॉक्टर्स की कोरोना के सिम्टम्स दिखने शुरू हो गयें, फिर एक हफ्ते बाद ये खुद भी कोरोना पॉजिटिव हो गईं। उसके बाद होम कोरन्टीन रहकर कोरोना से फाइट करती रहीं। उस दौरान वीकनेस इतनी ज्यादा होती थी कि खुद से उठकर घर में कोई काम करना भी मुश्किल था। तब उनके लिए खाना भी कोविड पेशेंट्स को निःशुल्क खाना पहुंचा रही किसी संस्था की तरफ से ही आता था। नींद बहुत कम आती थी। तब घर में अकेले समय व्यतीत करना बहुत मुश्किल था। समय का सदुपयोग करने के लिए उसी दौरान डॉ. आकांक्षा सोशल मीडिया के कई मुहिम से जुड़ीं। कोविड पेशेंट्स की सहायता के लिए व्हाट्सएप पर बने 5–6 ग्रुप्स से वे जुड़ गयीं।

मैसेज के द्वारा मरीजों को हेल्प पहुंचाने के इस मुहिम में शामिल होते ही शुरू के लगातार 10 दिन जरा सी भी फुर्सत नहीं मिल पा रही थी। डेंटिस्ट होने के नाते इनके पास सीरियस डेंटल केसेज तो आते ही थें उसके अलावा कोविड से रिलेटेड, सुगर और हार्ड पेशेंट्स के केसेज बढ़ने लगें। डॉ. आकांक्षा के कुछ फ्रेंड्स पटना एम्स में थें, तो इनका काम होता कि आये हुए मैसेजेस के आधार पर वे मरीज और डॉक्टर्स के बीच कॉर्डिनेट करती थीं। सीरियस डेंटल केस में कई बार ये वीडियो कॉलिंग के माध्यम से मरीज को चिकित्सीय सलाह देती थीं। 17 मई को जब ये कोरोना निगेटिव हुईं तो और उत्साह से सोशल मीडिया द्वारा जनसेवा के मुहिम में जुट गयीं। उस दौरान कब सुबह से रात हो जाती पता ही नहीं चलता था। चाहे आधी रात को 3 बजे हों या सुबह के 4, टाइम का कोई लिमिटेशन नहीं था। कभी भी किसी सीरियस केस के मैसेज आ जाते थें इसलिए हमेशा तब फोन को भी ऑन रखना पड़ता था। फोन के जरिये ही वे यथासंभव हॉस्पिटल में बेड की बुकिंग से लेकर ऑक्सीजन सिलेंडर की रिफलिंग तक मुहैय्या करा देती थीं।

जिस टाइम कोरोना अपने पीक पर था, ऑक्सीजन सिलेंडर की बहुत ज्यादा मारा मारी थी, डॉ. आकांक्षा ने अपने क्लिनिक के दो ऑक्सीजन सिलेंडर डोनेट किये थें। शुरू में तो वे उनके जान पहचानवालों के पास गयें फिर वहाँ से कई जगह रोटेट होते रहें।

इस दौरान विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं को डॉ. आकांक्षा ने अपनी तरफ से जरूरतमंदों के लिए 70 किलो राशन सामग्री और लगभग 5 हजार कोविड की आम दवाएं वितरित करने हेतु दीं। फेसबुक के माध्यम से उन्हें पता चला कि इन जरूरी दवाओं की आवश्यकता शहर से ज्यादा गाँव में है तो अपने फ्रेंड्स के माध्यम से दवाएं वहाँ तक पहुंचाईं। एक दफे सहरसा जिले में दवा भेजनी थी। तब दोस्तों ने उन्हें बताया कि राजधानी एक्सप्रेस से एक बंदा कहीं बाहर से आ रहा है और सहरसा जाएगा, बीच में उसका स्टॉपेज पटना स्टेशन है, लेकिन ट्रेन 10 मिनट ही रुकेगी। तबतक डॉ. आकांक्षा पूरी तरह स्वस्थ हो चुकी थीं, वे दोस्तों के बताए अनुसार तय समय पर पटना स्टेशन पहुँचकर उस बंदे को जरूरी दवाएं दे आईं। सहरसा पहुँचते ही दवाएं तीन–चार गावों में भेज दी गईं जहाँ बहुत ज्यादा जरूरत थी।

बोलो जिंदगी के साथ विशेष बातचीत में डॉ. आकांक्षा कहती हैं, "जब मैं भी कोरोना पॉजिटिव हो गयी तो फिर हर हाल में अपने मन को पॉजिटिव बनाये रखने के लिए इस सामाजिक मुहिम से जुड़ गई, और जब आपका मन एक बार सकारात्मक हो उठता है तो फिर आपके शरीर को स्वस्थ होने में ज्यादा वक्त नहीं लगता।"

❐

लाल मिर्च का अचार

✍ किरण उपाध्याय
रेसिपी एक्सपर्ट

इसबार हम ठंड के मौसम में मिलने वाले लाल मिर्च का स्वादिष्ट अचार बनाएंगे। अगर आप इस तरह से अचार बनाएंगे तो आपका अचार बहुत ही स्वादिष्ट बनेगा।

सामग्रियांः–

लाल मिर्च 1 किलो, सरसो डेढ़ सौ ग्राम, खड़ा या साबुत धनियां दो बड़े चम्मच, हींग आधा चम्मच, लाल मिर्च 50 ग्राम या स्वाद अनुसार, सिरका(विनिगर) एक बड़ा चम्मच, नमक चार बड़े चम्मच या स्वाद अनुसार, काला नमक एक बड़ा चम्मच, पंच फोरन दो बड़े चम्मच, सौंफ एक बड़ा चम्मच, मेथी आधा चम्मच, सरसो तेल आवश्यकता अनुसार, अदरक 2 इंच, तेज पत्ता तीन से चार, हल्दी पाउडर दो बड़े चम्मच, एक नींबू का रस, आमचूर पाउडर दो बड़े चम्मच या स्वाद अनुसार।

बनाने की विधिः–

सर्वप्रथम हम लाल मिर्च को धोकर धूप में सुखा लेंगे, अगर धूप

उपलब्ध नहीं है तो हम साफ कपड़े से सभी मिर्च को अच्छी तरह से साफ कर लेंगे। अब हम सभी मिर्चों को कैंची की मदद से करीब एक–एक इंच के टुकड़े में काट लेंगे। अब हम इन मिर्चों को धूप में या पंखे में एक दिन सुखा लेंगे , इससे मिर्च की नमी कम हो जाएगी और अचार जल्दी खराब नहीं होगा।

अब हम धीमी आंच पर सबसे पहले सरसो को हल्का गर्म करके निकाल लेंगे, फिर धनिया को हल्का सुनहरा होने तक धीमी आंच पर भूनकर निकालेंगे। अब हम लाल मिर्च और तेजपत्ता को हल्का भून लेंगे, जब तक उसका कलर चेंज हो जाए। अब हम मेथी को हल्का सा भून लेंगे, अब हम करीब एक चम्मच सौंफ को हल्का सा कढ़ाई में धीमी आंच पर भून लेंगे, भूनने के बाद हम कढ़ाई में दो चम्मच तेल गर्म करेंगे और इसमें अदरक, कद्दूकस करके हल्का भून लेंगे और तेल में ही हम हींग भी मिला लेंगे, इससे अचार में स्वाद और सुगंध आ जाता है। अब हम सभी मसालों को दरदरा पीस लेंगे , तत्पश्चात सभी मसालों को निकाल लेंगे और इसमें हम अदरक, हींग और सिरका, (विनीगर) आमचूर भी मिला देंगे। अब हम मिर्च के ऊपर इन मसालों को सूखा ही थोड़ा–थोड़ा कर मिला लेंगे। अब हम आवश्यकता अनुसार तेल मिला लेंगे जिससे कि मसालों में तेल अच्छी तरह से मिल जाए, इसके बाद हम अचार को धूप में अच्छी तरह से करीब एक सप्ताह सूखा लेंगे, इसी मसाले से हम हरी मिर्च का अचार भी बना सकते हैं। ❐

"एक देश एक चुनाव" लागू होने पर कई राज्यों का कार्यकाल घटेगा

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

केन्द्र सरकार ने शीतकालीन सत्र में 129 वें संशोधन विधेयक के रूप में दो विधेयक संसद में पेश कर दिए हैं। एक विधेयक, एक राष्ट्र एक चुनाव को लेकर है और दूसरा केन्द्र शासित प्रदेशों के चुनाव एक साथ कराने के लिए संविधान में संशोधन से संबंधित है। संविधान संशोधन के लिए दोनों सदनों में सत्तापक्ष को दो तिहाई बहुमत नहीं मिल पाया और स्वाभाविक रूप से दोनों विधेयक पारित नहीं हो सके। बिल को पेश करने को लेकर संसद में पहली बार इलेक्ट्रॉनिक मशीन से वोटिंग हुई, जिसमें 269 बोट ही सरकार के पक्ष में पड़े जबकि विरोध में 198 वोट पड़े। अब सरकार ने इन विधेयकों को संयुक्त संसदीय समिति के पास समीक्षा के लिए भेजने का फैसला किया। अगर यह विधेयक पारित हो जाता है तो वर्ष 2034 से पूरे देश में एक साथ चुनाव कराए जाएंगे। एनडीए सरकार एक देश–एक चुनाव को 2029 से पहले पूरी तरह धरातल पर उतारने की तैयारी में है।

वन नेशन वन इलेक्शन को लेकर लोकसभा सचिवालय ने संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) गठित कर दिया है, जिसमें लोकसभा से 27 सदस्य और राज्यसभा से 12 सदस्य शामिल हैं। समिति के अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी के सांसद पीपी चौधरी नियुक्त हुए हैं। समिति में लोकसभा के 27 सदस्यों में अध्यक्ष पीपी चौधरी के साथ, सीएम रेशम, बांसुरी स्वराज, पुरुषोत्तम भाई रुपाला, अनुराग सिंह ठाकुर, विष्णु दयाल राम, भर्तृहरि महताब, संबित पात्रा, अनिल बालुनी, विष्णु दत्त शर्मा, बैजयंत पांडा, संजय जायसवाल, प्रियंका गांधी वाड्रा, मनीष तिवारी, सुखदेव भगत, धर्मेंद्र यादव, छोटेलाल, कल्याण बनर्जी, टी एम सेल्वागणपति, जीएम हरीश, अनिल यशवंत देसाई, सुप्रिया सुले, श्रीकांत एकनाथ शिंदे, शांभवी चौधरी, के. राधाकृषणन, चंदन चौहान और बालशौरी वल्लभनेनी शामिल हैं। वहीं राज्यसभा से 12 सांसदों जिसमें घनश्याम तिवारी, भुवनेश्वर कलिता, डॉ के लक्ष्मण, कविता पाटीदार, संजय कुमार झा, रणदीप सिंह सुरजेवाला, मुकुल बालकृष्ण वासनिक, सांकेत गोखले, पी विल्सन, मानस रंजन, वी विजयसाई रेड्डी शामिल हैं।

संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) में बिहार के जदयू से राज्यसभा सांसद संजय कुमार झा, भाजपा से लोकसभा सांसद संजय जायसवाल और लोजपा (रामविलास) से लोकसभा सांसद शांभवी चौधरी शामिल हैं। वहीं समिति में भाजपा के 16, कांग्रेस के पांच, सपा, तृणमूल कांग्रेस और द्रमुक के दो–दो, शिवसेना, तेदेपा, जदयू, रालोद, लोजपा (रा), जन सेन पार्टी, शिवसेना–यूबीटी, राकांपा (सपा), माकपा, आप, बीज और

वाईएसआरसीपी के एक–एक सदस्य शामिल हैं।

एक देश एक चुनाव विधेयक लोकसभा में पेश करने के संबंध में सरकार का कहना है कि एक साथ चुनाव कराना कोई नई अवधारणा नहीं है। देश में पहले यह व्यवस्था थी। इसको लागू करने से देश के विकास की गति तेज होने की पूरी संभावना है। एक साथ चुनाव कराने से सरकार का ध्यान विकासात्मक गतिविधियों और जनता के कल्याण को बढ़ावा देने वाली नीतियों को लागू करने पर केंद्रित रहेगा।

देश में पहले भी लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के पहले आम चुनाव वर्ष 1951, 1957, 1962 और 1967 में एक साथ कराये गए थे। कुछ विधानसभाओं के समय से पहले भंग होने के कारण वर्ष 1968 और 1969 में यह बाधित हो गया था। चौथी लोकसभा भी समय से पहले भंग कर दी गई थी। इस कारण वर्ष 1971 में नया चुनाव कराना पड़ा। पांचवीं लोकसभा का कार्यकाल आपातकाल की घोषणा के कारण बढ़ा दिया गया था।

राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों को लेकर असमंजस की स्थिति है। वहीं दिल्ली में फरवरी 2025 में, बिहार में नवम्बर 2025 में, तमिलनाडु में अप्रैल 2026 में, पश्चिम बंगाल में अप्रैल 2026 में, असम में अप्रैल 2026 में, केरल में अप्रैल 2026 में, उत्तर प्रदेश में फरवरी 2027 में, उत्तराखंड में फरवरी 2027 में, पंजाब में फरवरी 2027 में, मणिपुर में फरवरी 2027 में, गुजरात में नवम्बर 2027 में, हिमाचल प्रदेश में नवम्बर 2027 में विधान सभा चुनाव होना है, ऐसी स्थिति में इन सभी राज्यों में एक देश एक चुनाव लागू होने पर कार्यकाल घटेगा।

जबकि एक देश एक चुनाव देश के लिए काफी फायदेमंद है। इसमें प्रशासनिक तंत्र और सुरक्षा बलों पर बार–बार पड़ने वाला बोझ कम होगा, चुनावी गतिविधियों में समय की बचत होगी और उस समय को दूसरे उपयोगी कामों में इस्तेमाल किया जा सकेगा। सांसदों और विधायकों का कार्यकाल एक ही होने के कारण उनके बीच भी समन्वय बढ़ेगा।

2014 में एनडीए को सत्ता में आने के बाद से भारतीय जनता पार्टी के लिए यह संशोधन 'एक देश–एक चुनाव महत्वाकांक्षी योजना है। अटल बिहारी वाजपेयी ने भी इसके पक्ष में बात कही थी। चुनाव सुधार की दिशा में यह एक बड़ा कदम है।

यह सही है कि लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ होंगे, तो बार–बार होने वाले विधानसभा चुनावों के खर्च से बचा जा सकेगा। सरकारी कामकाज बेहतर ढंग से हो सकेगा क्योंकि बार–बार चुनाव आचार संहिता लागू होने के कारण कामकाज प्रभावित होता है। चुनावों में प्रत्याशियों और पार्टियों की तरफ से होने वाला बेतहाशा खर्च पर भी अंकुश लगेगा। एक साथ चुनाव कराने से वित्तीय और प्रशासनिक संसाधनों की एक महत्त्वपूर्ण राशि की भी बचत हो सकती है, साथ ही चुनाव प्रचार में लगने वाला समय भी बच सकता है। एक साथ चुनाव कराने से चुनाव–संचालित नीति निर्माण का प्रभाव कम हो सकता है, जिससे सरकारें अल्पकालिक राजनीतिक लाभों के बजाय दीर्घकालिक योजना और कार्यान्वयन पर ध्यान केन्द्रित कर सकती हैं। चुनाव के दौरान लागू की जाने वाली आदर्श आचार संहिता, विकास परियोजनाओं और नीतिगत निर्णयों में बाधा उत्पन्न कर सकती है। चुनाव आयोग को अभी चुनावों के संचालन के लिए, सरकारी खजाने से बहुत अधिक धन खर्च करना पड़ता है। इस प्रकार चुनावों में समय और धन की हानि होती है।

यह मामला किसी एक दल का नहीं, बल्कि पूरे देश हित में है। भारत जैसे विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में इस राह में बहुत सारी चुनौतियां भी सामने आ सकती है। इनमें सबसे बड़ी समस्या लोकसभा और विधानसभाओं के कार्यकाल के बीच सामंजस्य स्थापित करने की होगी। ❐

मार्को- भारतीय सिनेमा की सबसे हिंसक फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर सनसनी मचा दी

मुंबई ब्यूरो, मार्कोः हिंसा और शैली को नए सिरे से परिभाषित करनेवाली एक रिकॉर्ड तोड़नेवाली मलयालम फिल्म।

जब मार्को का टीजर और ट्रेलर लॉन्च हुआ, तो इसने दर्शकों के बीच एक जबरदस्त चर्चा पैदा कर दी। भारतीय सिनेमा में अब तक बनी सबसे हिंसक फिल्म के रूप में प्रचारित, टीजर ने ही फिल्म की तीव्रता का स्वर सेट कर दिया, जिसमें प्राकृतिक हिंसा और स्टाइलिश फिल्म निर्माण का मिश्रण दिखाया गया।

क्षेत्रीय सीमाओं को तोड़ते हुए, निर्माताओं ने हिंदी में भी टीजर जारी किया, जिसे ऑनलाइन सकारात्मक टिप्पणियों के साथ–साथ व्यापक प्रशंसा और महत्वपूर्ण दृश्य मिले।

हनीफ अदेनी द्वारा निर्देशित और शारिफ मुहम्मद द्वारा क्यूब्स एंटरटेनमेंट्स बैनर के तहत निर्मित, मार्को ने 20 दिसंबर, 2024 को सिनेमाघरों में शानदार प्रदर्शन किया।

दुनिया भर में अपने पहले दिन, फिल्म ने दुनिया भर के बॉक्स ऑफिस पर ₹10.8 करोड़ की शानदार कमाई की, जो मलयालम फिल्म के लिए सबसे बड़ी ओपनिंग रिकॉर्ड में से एक है।

इसमें भारत के बॉक्स ऑफिस पर मलयालम डेब्यू से ₹4.21 करोड़ की कमाई शामिल है। कथित तौर पर फिल्म हिंदी दर्शकों के बीच अपनी व्यापक अपील को प्रदर्शित करते हुए अच्छा कारोबार कर रही है।

आलोचकों ने फिल्म के शानदार निष्पादन और उन्नी मुकुंदन की

आकर्षक उपस्थिति की सराहना की है। एक पत्रकार ने सटीक टिप्पणी की, मार्को मलयालम में अब तक बनी सबसे हिंसक फिल्म है। उन्नी मुकुंदन का स्वैग और स्टाइलिश फिल्म निर्माण एक पूर्वानुमानित कहानी वाली फिल्म की खूबियाँ हैं।

फिल्म की सफलता पर अपने विचार साझा करते हुए, निर्देशक हनीफ अदेनी ने कहा, मार्को एक ऐसा प्रोजेक्ट है जो मेरे दिल के बहुत करीब है। यह सिर्फ हिंसा के बारे में नहीं है – यह शैली, भावनाओं और पात्रों की गहराई के बारे में है। मैं दर्शकों को कहानी और अभिनय से जुड़ते हुए देखकर रोमांचित हूँ। हिंदी रिलीज भी उतनी ही खास है, क्योंकि यह मलयालम सिनेमा को व्यापक दर्शकों तक ले जाने का हमारा प्रयास है। 2019 की फिल्म मिखाइल की स्पिन–ऑफ मार्को में उन्नी मुकुंदन, युक्ति थरेजा, सिद्दीकी, जगदीश, एंसन पॉल और राहुल देव जैसे बेहतरीन कलाकार हैं। रवि बसरूर द्वारा रचित संगीत, चंद्रू सेल्वराज द्वारा छायांकन और शमीर मुहम्मद द्वारा संपादन के साथ फिल्म की तकनीकी प्रतिभा स्पष्ट है। फिल्म की हिंसा–भारी कथा, इसकी अनूठी शैली के साथ मिलकर, न केवल मलयालम उद्योग में बल्कि हिंदी सिनेमा बाजार में भी एक स्थायी छाप छोड़ने की उम्मीद है। मार्को के साथ, निर्माताओं ने क्षेत्रीय सिनेमा और अखिल भारतीय अपील को सफलतापूर्वक जोड़ा है, जिससे राष्ट्रीय क्षेत्र में मलयालम फिल्मों के लिए एक नया मानक स्थापित हुआ है।

मार्को सिर्फ एक फिल्म नहीं है, यह एक सिनेमाई अनुभव है जो बॉक्स ऑफिस पर दीर्घकालिक प्रभाव डालने और भारतीय सिनेमा में एक्शन थ्रिलर के मानकों को फिर से परिभाषित करने के लिए तैयार है। ❐

बोलो जिंदगी

पत्रिका में विज्ञापन के लिए हमसे संपर्क करें।

Mob.: 7903935006 / 9122113522

E-mail : bolozindagi@gmail.com

मेल बॉक्स

बोलो जिंदगी

के पाठक हमसे सीधा सम्पर्क करें।

नीचे दिये गये ई-मेल के माध्यम से हमे बतायें कि उन्हें कौन सा आलेख ज्यादा पसंद आया। क्या कमियां हैं और उनके क्या सुझाव हैं।

E-mail : bolozindagi@gmail.com

स्व. बेटे की याद में स्कूल बनवाने के लिए सरकार को दान कर दी 32 कट्ठा जमीन

अपनी विधवा बहू का कराया पुनर्विवाह : प्रतिभा द्विवेदी

पटना के कंकड़बाग कॉलोनी में रहनेवाली विडो प्रतिभा द्विवेदी ने ना सिर्फ एक माँ का फर्ज निभाया बल्कि एक सास का भी सराहनीय फर्ज निभाया। उनके योगदान और संघर्ष को देखकर लोग उनकी मिसाल देते नहीं थकतें।

जवान बेटे को खोने के बाद उसकी याद में अपनी 32 कट्ठा जमीन सरकार को दान कर दी इस शर्त पर कि उस जमीन पर उनके बेटे के नाम से एक सरकारी स्कूल खुले, ताकि उनके बेटे का नाम अमर रहे। बेटे के शादी के महज दो महीने बाद ही एक्सीडेंट में उसकी मौत हो गयी। नई नवेली बहू के सामने पूरी जिन्दगी पड़ी थी। लेकिन यहाँ भी प्रतिभा जी ने आगे बढ़कर समाज की परवाह ना करते हुए अपनी बहू का पुनर्विवाह कराया। सच में ऐसी महिलाएं एक माँ के रूप में, श्रद्धा के रूप में समाज के लिए जीती जागती आदर्श मिसाल हैं।

इनके सराहनीय कार्य को देखते हुए 'बोलो जिन्दगी वेलफेयर फाउंडेशन' द्वारा 'मदर्स डे' की पूर्व संध्या पर 7 मई 2022 को पटना के बिहार विधानपरिषद, उपभवन सभागार में आयोजित

कार्यक्रम 'माँ तुझे सलाम' में तत्कालीन पर्यटन मंत्री श्री नारायण प्रसाद, बिहार सरकार ने प्रतिभा द्विवेदी को सम्मानित किया है।